सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक 266 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, बुधवार 4 नवम्बर, 2026
मूल्य ₹ 3/-





छोटी चीजों में वफादार रहिये क्योंकि इन्ही में आपकी शक्ति निहित है।
-मदर टेरेसा

लिविंगस्टोन को टीम में शामिल करने की... 7
एमएलसी चुनाव के बाद बिहार में... 3
चुनाव नहीं लड़ूंगा, दूसरे नेताओं... 2

ट्रंप की हार से मोदी की सत्ता को खतरा!

डेमोक्रेट का अमेरिकन कांग्रेस पर कब्जा

अमेरिकन मध्यावधि चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी की हार

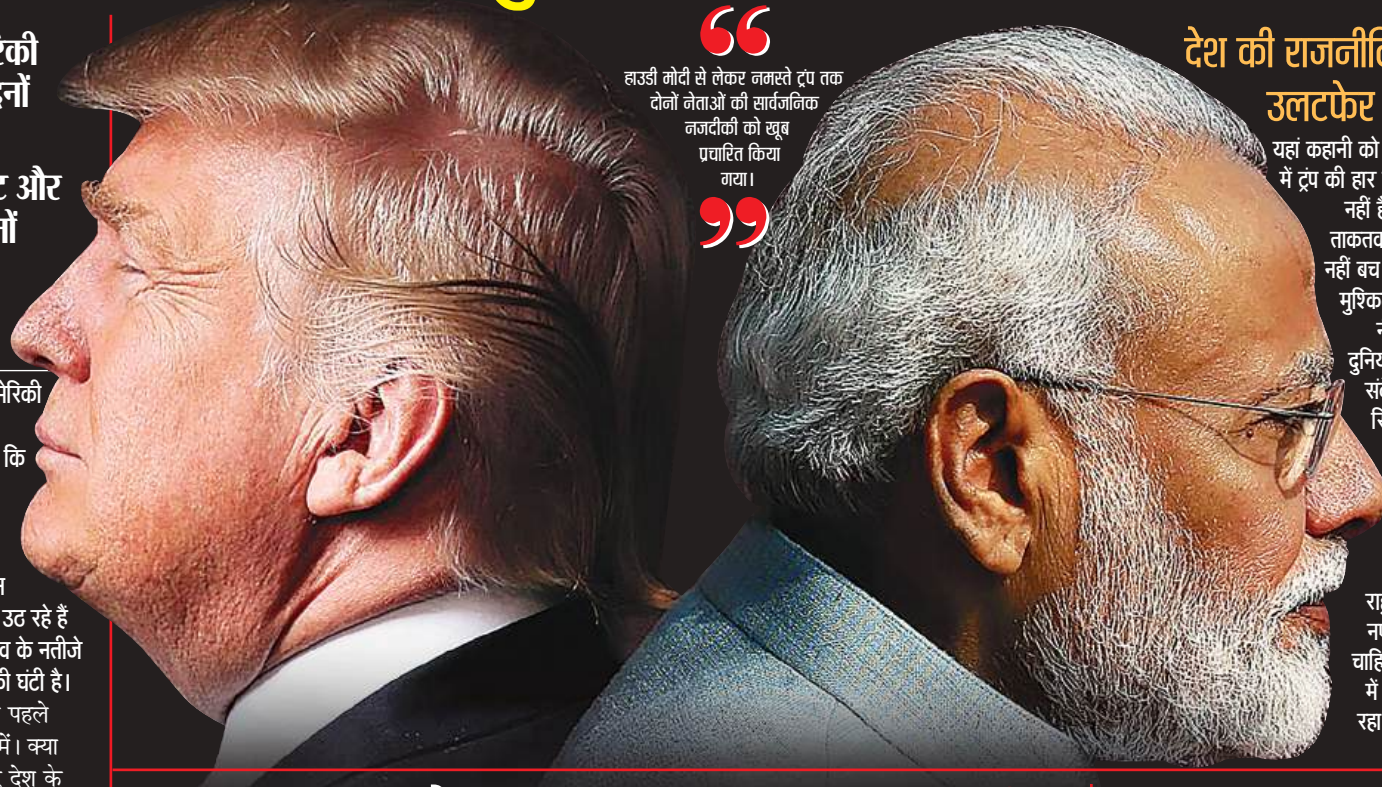
» ट्रंप की पार्टी अमेरिकी संसद के दोनों सदनों से बाहर

» डेमोक्रेट्स ने सीनेट और प्रतिनिधि सभा दोनों में बहुमत हासिल कर लिया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। ट्रंप की अकड़ पर अमेरिकी जनता ने ऐसा ब्रेक लगाया है कि व्हाइट हाउस से लेकर भारत तक कि सियासत में हड़कंप मच गया है। अमेरिका इलेक्शन में कांग्रेस के दोनों सदनों में अब डेमोक्रेट का कब्जा हो गया है। और रिपब्लिकन पार्टी की पकड़ जाती रही। सवाल उठ रहे हैं कि क्या अमेरिकन मध्यावधि चुनाव के नतीजे मोदी सरकार के लिए भी खतरे की घंटी है।

राहुल गांधी की एक साल पहले वाली भविष्यवाणी फिर चर्चा में। क्या बदलती वैश्विक राजनीति और देश के भीतर बढ़ता असंतोष मिलकर देश में सत्ता परिवर्तन की स्क्रिप्ट लिख सकते हैं क्योंकि जिस ट्रंप को दुनिया के सामने अपनी ताकत का प्रदर्शन करने का शौक था, जिस ट्रंप के हर बयान में धमकी और हर फैसले में दबाव बनाने की कोशिश दिखाई देती थी उसी ट्रंप को अपने देश के मतदाताओं ने ऐसा राजनीतिक झटका दिया है कि उनकी पार्टी अमेरिकी संसद के दोनों सदनों से बाहर हो गयी। डेमोक्रेट्स ने सीनेट और प्रतिनिधि सभा दोनों में बहुमत हासिल कर लिया। यह सिर्फ चुनावी नतीजा नहीं ट्रंप की नीतियों की शवयात्रा है।



“ हाउडी मोदी से लेकर नमस्ते ट्रंप तक दोनों नेताओं की सार्वजनिक नजदीकी को खूब प्रचारित किया गया। ”

देश की राजनीति में क्या कोई बड़ा उलटफेर आकार ले रहा है?

यहां कहानी को समझने की जरूरत है। अमेरिका में ट्रंप की हार मोदी सरकार के गिरने का प्रमाण नहीं है। लेकिन यह जरूर बताती है कि ताकतवर नेता भी जनता की नाराजगी से नहीं बच सकते। ईरान के मोर्चे पर ट्रंप की मुश्किलें और अमेरिका के भीतर उनकी नीतियों के खिलाफ आया जनादेश दुनिया की राजनीति में बदलते मूड का संकेत हैं। भारत में भी सत्ता को अब सिर्फ चुनावी जीत के पुराने आंकड़ों से नहीं बल्कि जनता के मौजूदा सवालों से जवाब देना होगा। तो क्या ट्रंप के राजनीतिक झटके से मोदी सरकार के लिए भी खतरे की घंटी बज गई है? क्या राहुल गांधी की भविष्यवाणी को अब नए राजनीतिक संदर्भ में देखा जाना चाहिए? और क्या भारत की राजनीति में भी कोई बड़ा उलटफेर आकार ले रहा है? कहानी यहीं से शुरू होती है।

क्या संभव है भारत में सत्ता परिवर्तन

पीएम नरेंद्र मोदी और प्रेसीडेंट डोनाल्ड ट्रंप की नजदीकी को लंबे समय तक दोनों नेताओं की ताकत, वैश्विक प्रभाव और राजनीतिक केमिस्ट्री के रूप में देश के भीतर पेश किया गया। ट्रंप की जीत को मोदी की कूटनीतिक सफलता बताया गया लेकिन अब ट्रंप की पार्टी अपने ही देश में सत्ता के विधायी केंद्रों पर पकड़ खो चुकी है। ऐसे में सवाल उठना लाजिमी है कि क्या जिस अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक सहारे को मोदी सरकार अपनी ताकत के रूप में पेश करती चली आ रही है वह खुद कमजोर पड़ चुका है। देश के भीतर राहुल गांधी पहले ही दावा कर चुके हैं कि एक साल के भीतर पीएम मोदी की सरकार गिर जाएगी। उस वक्त उनके इस बयान को राजनीतिक बयानबाजी बताकर बीजेपी ने खारिज कर दिया था। लेकिन जिस तेजी से देश दुनिया के हालात बदलते हैं उनको देखकर लग रहा है कि राहुल गांधी की भविष्यवाणी में दम है। एसआईआर को लेकर देशव्यापी विवाद, चुनाव आयोग के भीतर दर्ज आपत्तियां, दिल्ली में विपक्ष का बड़ा प्रदर्शन और सत्ता के खिलाफ बढ़ती राजनीतिक लामबंदी यह सारे घटनाक्रम अलग-अलग जरूर हैं, लेकिन एक ही सवाल खड़ा कर रहे हैं कि क्या मोदी सरकार जाने वाली है?

मोदी-ट्रंप की दोस्ती का राजनीतिक हिसाब

नरेंद्र मोदी और डोनाल्ड ट्रंप के रिश्तों को दोनों देशों की राजनीति में खास महत्व दिया गया। हाउडी मोदी से लेकर नमस्ते ट्रंप तक दोनों नेताओं की सार्वजनिक नजदीकी को खूब प्रचारित किया गया। एक दूसरे के समर्थन में दिए गए बयान और साझा मंचों की तस्वीरें राजनीतिक संदेश का हिस्सा बनीं। भारत में ट्रंप की वापसी को मोदी सरकार की कूटनीतिक सफलता के रूप में भी प्रस्तुत किया गया। यह दावा किया गया कि मोदी और ट्रंप की दोस्ती से भारत को वैश्विक मंच पर फायदा मिलेगा। लेकिन अब तस्वीर बदल रही है। ट्रंप की पार्टी अमेरिकी संसद के दोनों सदनों में बहुमत गंवा चुकी है। राष्ट्रपति के पास विदेश नीति और कार्यपालिका के स्तर पर अधिकार बने रहेंगे लेकिन घरेलू राजनीति में उनकी स्थिति कमजोर हुई है और ट्रंप के कमजोर होने का असर सीधे भारत पर पड़ता दिखायी दे रहा है क्योंकि अमेरिका की विदेश नीति केवल राष्ट्र पति की निजी दोस्ती से नहीं चलती वहां संसद, संस्थाएं, रणनीतिक हित और प्रशासनिक तंत्र कि अहम भूमिका होती है। ट्रंप की हार का राजनीतिक संदेश बदलता है कि जिस नेता के साथ मजबूत रिश्तों को अपनी वैश्विक ताकत का प्रतीक बताया वह नेता अब अपने ही देश में विपक्ष के दबाव में है। ऐसे में मोदी सरकार के लिए भी यह समझना जरूरी है कि अंतरराष्ट्रीय रिश्तों का राजनीतिक लाभ स्थायी नहीं होता। कूटनीति की सफलता का आकलन तस्वीरों और मंचों से नहीं बल्कि देश के हितों और ठोस नतीजों से होता है।

ट्रंप की हार सत्ता के अहंकार पर जनता का प्रहार

अमेरिका के मध्यावधि चुनाव ने डोनाल्ड ट्रंप की राजनीति को बड़ा झटका लगा है। डेमोक्रेटिक पार्टी ने सीनेट और प्रतिनिधि सभा दोनों में बहुमत हासिल कर लिया है। इसका मतलब है कि ट्रंप के दूसरे कार्यकाल के बचे हुए दो वर्षों में उन्हें संसद के दोनों सदनों में विपक्ष की मजबूत चुनौती का सामना करना पड़ेगा। यह परिणाम इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि ट्रंप ने इन चुनावों को अपनी लोकप्रियता और नीतियों के समर्थन की परीक्षा बना दिया था। उन्होंने कई रिपब्लिकन उम्मीदवारों के लिए प्रचार किया। लेकिन जिन उम्मीदवारों के लिए ट्रंप ने ताकत झोंकी उनमें से कई को हार का सामना करना पड़ा। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक डेमोक्रेट्स ने सीनेट की छह रिपब्लिकन सीटें पलटी और प्रतिनिधि सभा में भी कम से कम आठ सीटें अपने पाले में कीं। टेक्सास, आयोवा, ओहायो और साउथ कैरोलाइना जैसे राज्यों में मिली सफलता ने इस जीत को और बड़ा बना दिया। मतदाताओं की नाराजगी के पीछे महंगाई जीवनयापन की बढ़ती लागत और ईरान युद्ध जैसे मुद्दे रहे।

मैं चुनाव नहीं लड़ूंगा, दूसरे नेताओं को लड़वाऊंगा : अखिलेश यादव

» सपा प्रमुख बोले- हम मुख्यमंत्री तब बनते हैं, जब चुनाव नहीं लड़ते

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर समाजवादी पार्टी ने नये सियासी तेवर दिखाने शुरूकर दिए है। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि वह इस बार खुद विधानसभा चुनाव नहीं लड़ेंगे, बल्कि पार्टी के दूसरे नेताओं को चुनाव लड़वाएंगे।

उन्होंने अपने राजनीतिक सफर का उदाहरण देते हुए कहा कि पिछली बार वह विधानसभा चुनाव जीते थे, लेकिन पार्टी को 202 विधायकों का आंकड़ा नहीं मिल सका था। इस बार उन्होंने तय किया है कि वह खुद चुनाव लड़ने के बजाय दूसरों को चुनाव लड़वाएंगे। अखिलेश यादव ने वर्ष 2012 का जिक्र करते हुए कहा कि जब वह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने थे, तब लोकसभा के सांसद थे। उन्होंने इसी राजनीतिक घटनाक्रम को अपने लिए शुभ बताते हुए कहा कि इस बार भी वही करेंगे, जो उनके लिए शुभ रहा है।



पंकज चौधरी का टिकट पक्का नहीं होने दे रहे सीएम

अखिलेश यादव ने यूपी बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी और सीएम योगी आदित्यनाथ का नाम लिए बिना बड़ा हमला किया है। उन्होंने दोनों नेताओं के बीच तनाव होने का दावा किया और आरोप लगाया कि यूपी में सिर्फ दिल्ली और लखनऊ के बीच ही लड़ाई नहीं है बल्कि गोरखपुर के अंदर भी बीजेपी के अंदर वर्चस्व की लड़ाई चल रही है। एक्स पर पोस्ट में अखिलेश ने इशारों में दावा किया कि सीएम योगी, पंकज चौधरी की टिकट पक्की नहीं होने दे रहे हैं। पोस्ट के अंत में सपा चीफ ने यह भी लिखा कि अगर ऐसा नहीं है है तो बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष सबसे पहले अपना टिकट घोषित करें। सोशल मीडिया पर पोस्ट कर पंकज चौधरी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर बिना नाम लिखे निशाना साधते हुए कहा कि जिनकी खुद की टिकट उनके अपने ही पड़ोसी पक्की नहीं होने दे रहे हैं, वो चुप ही रहें तो ही उनका सम्मान बचा रहेगा। उन्होंने जो टीका-टिप्पणी की है वो भी किसी 'दुष्मुखी' के वचनों से प्रेरित लगती है. भगवान कृष्ण के एक अन्य परमार्थी नाम 'रणछोड़' को नकारात्मक भाव में प्रयुक्त करके उन्होंने साबित कर दिया है कि उनका ज्ञान कितना सीमित, संकीर्ण व समाज के लिए किस हद तक घातक है।

गोरखपुर की जनता को सब दिख रहा

सपा चीफ ने कहा कि रही बात लोकसभा से सीधे मुख्यमंत्री बनने की तो वो यह कहकर किसकी ओर इशारा कर रहे हैं, गोरखपुर वाले इस पुरानी रार-तकरार को समझते हैं. गोरखपुर की जनता को सब दिख रहा है, वो काला चश्मा लगाए नहीं बैठी है. अब दिल्ली-लखनऊ की ही आपसी लड़ाई नहीं, गोरखपुर के अंदर भी भाजपा में वर्चस्व की अंदरूनी लड़ाई 'लिखा-पढ़ी' में बाहर आ गई है। उन्होंने कहा कि नोटिस देनेवालों का उप्र का प्रबुद्ध समाज भूला नहीं है। हमने कभी जो प्रश्न पूछे थे आज फिर पूछ रहे हैं क्योंकि तबसे लेकर आज तक ये प्रश्न अनुत्तरित ही रहे हैं।

सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने वालों को प्रदेश सीमा में न आने दिया जाए

समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने आध्यात्मिक प्रवचनकर्ता धीरेंद्र शास्त्री पर भगवान कृष्ण और भगवान राम के पिता पर विवादित बयान देकर धार्मिक भावनाएं आहत करने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि ऐसे लोगों का न तो ब्रज में स्वागत होगा और न ही अवध में प्रवेश मिलेगा। पूर्व मुख्यमंत्री ने उत्तर प्रदेश सीमा पर नाकाबंदी बोर्ड लगाने और सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने के लिए उनके कार्यक्रम रद्द करने की मांग की।

टिकट फाइनल होने के बाद ही विधानसभा क्षेत्र में रैली करेंगे अखिलेश

समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर एक अहम रणनीति तैयार की है। पार्टी सूत्रों के अनुसार, अब अखिलेश यादव संबंधित विधानसभा क्षेत्र में टिकट फाइनल होने के बाद ही चुनावी रैलियां करेंगे। इसका मुख्य उद्देश्य पार्टी के भीतर आंतरिक विरोध और असंतोष को न्यूनतम स्तर पर रखना है। अब तक यह देखा गया है कि जब पार्टी किसी सीट पर बिना उम्मीदवार की घोषणा किए रैलियां करती थी, तो जिन स्थानीय दावेदारों को टिकट नहीं मिल पाता था, पर वे रैली में अपने संसाधन टिकट की उम्मीद में लगाते थे, बाद में वे अवसर नाराज होकर भीतरघात करने लगते थे। इस अंदरूनी कलह और भितरघात से पार्टी को कई बार नुकसान उठाना पड़ता था। इसी स्थिति से सबक लेते हुए सपा नेतृत्व ने यह स्पष्ट निर्देश तय किए हैं कि टिकट वितरण की प्रक्रिया पूरी होने और उम्मीदवार के नाम पर मुहर लगने के बाद ही उस क्षेत्र में शीर्ष नेतृत्व का चुनावी दौरा या जनसभा आयोजित होगी।

यूपी में महिला कांग्रेस को मिली नयी प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष

» 2022 में रामपुर कारखाना से रही थीं प्रत्याशी शहला अहरारी को जिम्मेदारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क



लखनऊ। यूपी में महिला कांग्रेस का नया प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष शहला अहरारी को बनाया गया है। अभी तक वह (पूर्वी ज़ोन) की अध्यक्ष थीं। वह वर्ष 2022 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में देवरिया जिले की रामपुर कारखाना विधानसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी थीं। कांग्रेस की दिल्ली में हुई बैठक में विधानसभा चुनाव के लिहाज से उत्तर प्रदेश में प्राथमिकता वाली सीटों, घोषणा पत्र और संगठन के विस्तार पर चर्चा हुई।

कांग्रेस उन सीटों को अपनी प्राथमिकता में रखेगी, जहां 2022 और लोकसभा चुनाव 2024 में पार्टी को बेहतर वोट मिला है। दिवाली के बाद प्रदेश कार्यकारिणी की घोषणा होगी। दिल्ली में प्रदेश प्रभारी राजेंद्र पाल गौतम, प्रदेश अध्यक्ष आराधना मिश्रा मोना एवं सभी जोन प्रभारियों व सह सचिवों की मौजूदगी में बैठक हुई। पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी ने अब तक की गई तैयारी के बारे में जानकारी ली। पार्टी सूत्रों का कहना है कि दिल्ली में हुई बैठक में वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव और लोकसभा चुनाव 2024 में जहां पार्टी के उम्मीदवार थे, उन क्षेत्र की किस विधानसभा में सर्वाधिक वोट मिले हैं, उसके बारे में भी जानकारी ली। इसी तरह घोषणा पत्र को लेकर भी चर्चा हुई। पार्टी अपने घोषणा पत्र में युवाओं, महिलाओं, पिछड़े, दलितों और अल्पसंख्यकों से जुड़े मुददों को रखेगी। प्रदेश कार्यकारिणी की घोषणा भी दिवाली बाद होगी। पार्टी की ओर से तैयार की गई विभिन्न कमेटियों एवं पदाधिकारियों की सूची पर भी चर्चा हुई। प्रदेश प्रभारी राजेंद्र पाल गौतम ने बताया कि बैठक में सियासी रणनीति से लेकर संगठनात्मक विस्तार तक पर चर्चा हुई है। आगामी विधानसभा चुनाव में प्राथमिकता वाली सीटों पर भी मंथन किया गया है। दिवाली बाद प्रदेश कार्यकारिणी की घोषणा होगी।

महाराष्ट्र की लोकतांत्रिक व्यवस्था सत्ताधारियों की वजह से संकट में : संजय राउत

» शिवसेना यूबीटी के सांसद का आरोप- गुजरात को हर चीज बेच रही फडणवीस

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। शिवसेना यूबीटी के राज्यसभा सांसद संजय राउत ने हाल ही में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस पर बड़ा हमला बोला है। संजय राउत का कहना है कि सरकार गोकुल को गुजरात के हाथों में सौंपने की कोशिश कर रही है। सरकार के लोग ही सड़कों पर मोर्चा निकाल रहे हैं, जबकि महाराष्ट्र की लोकतांत्रिक व्यवस्था सत्ताधारियों की वजह से संकट में है।

संजय राउत का कहना है कि गोकुल की 25 में से 13 सीटों पर सतेज पाटील के समर्थित समविचारी पैनल ने जीत हासिल की है। ऐसे में उसी पैनल का अध्यक्ष बनना जरूरी है। देवेंद्र फडणवीस और चंद्रकांत पाटील बहुमत का सम्मान नहीं कर रहे हैं और समविचारी पैनल को अध्यक्ष बनने से रोक रहे हैं। शिवसेना यूबीटी सांसद राउत का आरोप है कि एक्सपर्ट पैनल को बीच में लाकर गोकुल पर अपना नियंत्रण बनाए रखने की कोशिश की जा रही है। गोकुल को अमूल को बेचने की साजिश को किसानों ने नाकाम कर दिया है। देवेंद्र फडणवीस से सवाल करते हुए संजय राउत ने कहा कि गोकुल को बचाने के लिए आप मोर्चा निकालिए। मुख्यमंत्री लोकतंत्र के नाम पर लोकतांत्रिक प्रक्रिया का अपमान कर रहे हैं. एक तरफ सरकार के लोग लोकतंत्र के नाम पर मोर्चे निकाल रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ गोकुल को गुजरात के हाथों में सौंपने की कोशिश हो रही है। इतना ही नहीं, संजय राउत ने सीएम फडणवीस को सलाह देने के लहजे में कहा,पीएम मोदी, अमित शाह और फडणवीस के बीच क्या राजनीतिक समीकरण हैं, यह देखने के बजाय फडणवीस को गोकुल के मुद्दे पर ध्यान देना चाहिए।



सीएम बनने के लिए टोना-टोटका कर रहे अखिलेश : बीएल वर्मा

» केंद्रीय मंत्री ने सपा मुखिया को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क



लखनऊ। समाजवादी पार्टी के अखिलेश यादव के यूपी विधानसभा चुनाव नहीं लड़ने के ऐलान पर केंद्रीय मंत्री बी एल वर्मा ने निशाना साधा है। उन्होंने दावा किया कि अखिलेश यादव ने ऐसा इसलिए कहा कि यूपी में जिस तरह का माहौल है उससे साफ़ है कि वो दोबारा मुख्यमंत्री नहीं बनेंगे। बीएल वर्मा ने इसके साथ ही महिला आरक्षण बिल और पीएम मोदी को डिबेट का चैलेंज दिए जाने पर भी तीखी प्रतिक्रिया दी।

बीएल वर्मा ने अखिलेश यादव के चुनाव नहीं लड़ने पर प्रतिक्रिया देते हुए कार कि इस तरह के टोने टोटकों से राजनीति नहीं चलती है. उत्तर प्रदेश में जिस तरह का माहौल है उससे साफ लग रहा है आगे आने वाले लंबे समय तक उनको मुख्यमंत्री बनने का मौका नहीं मिलने वाला है। यूपी के डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने कहा कि ये सपा अध्यक्ष के मुंगेरी लाल के हसीन सपने हैं जो कभी पूरे नहीं होंगे।



सीएम ने बिहार को बर्बाद करने की सुपारी ले रखी है : तेजस्वी

» बिहार में क्राइम हो सकता है अपराध नहीं, सम्राट के बयान पर राजद नेता कका तंज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार के मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी के भाषण का एक हिस्सा सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। राजमार्ग परिवहन मंत्रालय और बिहार सरकार के बीच नदी जल प्रबंधन को लेकर हुए समझौते के दौरान मुख्यमंत्री ने भाषण दिया था। इसी दौरान वह बिहार में अपराध को लेकर बात करने लगे।

उनके बयान को लेकर सोशल मीडिया पर लोग सवाल उठा रहे हैं कि आखिर मुख्यमंत्री की बात का अर्थ क्या है। सम्राट चौधरी ने कहा, हमारे यहां कोई अपराध नहीं है। अपराध का कॉन्सेप्ट ही खत्म हो चुका है। क्राइम हो सकता है, लेकिन अपराध नहीं। कोई अपराधी नहीं है। दूसरी सबसे बड़ी चुनौती बिहार के लिए है पानी का प्रबंधन। यदि बिहार ने पानी का प्रबंधन कर लिया तो वह नए सिरे से खड़ा होगा। तेजस्वी यादव ने तंज कसते हुए कहा कि मुख्यमंत्री के इस बयान पर नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने तंज कसते हुए सोशल मीडिया पर लिखा, बिहार में 'क्राइम' हो सकता है, 'अपराध' नहीं! तेजस्वी यादव ने आगे लिखा, मेरे प्यारे देशवासियों, ये बात 7 हत्याओं का आरोपी नमूना मोदी जी द्वारा चयनित मुख्यमंत्री कह रहा है। मंच पर बैठे नेता इनके साथ काम करने पर अपने आपको सम्मानित समझ रहे है या अपमानित? क्या नरेन्द्र मोदी जी ने इस आदमी के हाथों बिहार को बर्बाद कराने की सुपारी ले रखी है?



एमएलसी चुनाव के बाद बिहार में सियासी दांव

राजद खुश, जदयू में बवाल जारी, बगावत की आहट

छोटे सरकार तो महज ट्रेलर, ललन सिंह पर बनेगी बात

» होने लगी है सियासी तूफान की आहट

» एमएलसी नीरज कुमार के बयान पर क्या खिचड़ी पकने की संभावना है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। एमएलसी चुनाव के बाद से बिहार में राजनीति में कुछ ऐसी आहट हो रही है, जैसे वहां पर बहुत कु छ अभी होने वाला है। वहां पर सत्ताधारी दल जदयू में बगावत की सुगबुगाहट सुनाई दे रही है। हालांकि उसे कोई और भी नाम दे सकते हैं। वहीं। अनंत सिंह का जेडीयू से निष्कासन महज एक ट्रेलर है। असली कहानी कहानी अभी बाकी है। मोकामा विधायक अनंत सिंह पर हुई कार्रवाई को राजनीतिक गलियारों में अंत नहीं माना जा रहा था। और सच यह है कि आज इस बात का संकेत पटना स्नातक से विजयी उम्मीदवार नीरज कुमार ने दे ही दी।

वैसे भी गुटबाजी के चरम पर पहुंचा केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह और जदयू के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा का विवाद अनंत सिंह के बलिदान के बात शांत होने वाला नहीं था। क्या होगा आगे का राजनीतिक दृश्य। एक विश्लेषण जरूरी है। पहले जानिए की एमएलसी नीरज कुमार के बयान पर क्या खिचड़ी पकने की संभावना है। बिहार विधान परिषद चुनाव के दरम्यान प्रशांत किशोर मीडिया के लिए सर्वसुलभ थे। वोटिंग के दिन से वो दिखाई नहीं दिए। पटना के जन सुराज पार्टी ऑफिस में भी सन्नाटा पसरा है। इस बीच बिहार की सत्ताधारी जेडीयू में ज्यादा हलचल देखने को मिल रही है। जेडीयू ने अनंत सिंह को प्रशांत किशोर के उम्मीदवार अनुज सिंह के प्रचार करने के आरोप में गाज गिरा दी। अब उनकी विधायकी पर भी खतरा मंडरा रहा है। दरअसल, बिहार विधान परिषद चुनाव के दौरान जन सुराज के प्रत्याशी अनुज सिंह का समर्थन करने के आरोप में जेडीयू ने अनंत सिंह पर बड़ा एक्शन लेते हुए उन्हें 6 साल के लिए पार्टी से निलंबित कर दिया। इस कार्रवाई के बाद अनंत सिंह की विधायकी पर भी खतरा मंडराने लगा है। जहां इस पूरे घटनाक्रम पर जन सुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर फिलहाल खामोश हैं, वहीं उनकी पार्टी ने इस पर तीखा पलटवार किया है। जन सुराज पार्टी ने इस निष्कासन को बिहार एनडीए के भीतर चल रही आपसी खींचतान और सम्राट चौधरी के नेतृत्व पर उठ रहे सवालों का नतीजा करार दिया है।



जेडीयू में बॉस बनने की जंग को लेकर खींचतान

जन सुराज का आरोप है कि इस कार्रवाई से बिहार एनडीए की अंदरूनी सिरफुटौव्वल खुलकर सामने आ गई है। पार्टी प्रवक्ता के अनुसार, वर्तमान में जेडीयू के भीतर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के बाद अगला बॉस कौन होगा, इसे लेकर गुटबाजी और खींचतान चरम पर है। यह पूरा घटनाक्रम प्रदेश बीजेपी नेतृत्व पर उठ रहे सवालों का ही साइड इफेक्ट है। जन सुराज ने दावा किया कि दिल्ली से पार्टी को नियंत्रित किया जा रहा है। प्रवक्ता ने कहा कि जेडीयू में ललन सिंह और संजय झा के गुटों के बीच आपसी वर्चस्व की लड़ाई चलती रहेगी। भविष्य में जेडीयू, बीजेपी के एक आनुषंगिक संगठन (विंग) के तौर पर काम करती नजर आएगी।

अनंत सिंह पर एक्शन, प्रशांत किशोर की चुप्पी

बिहार विधान परिषद चुनाव के दौरान लगातार मीडिया के सामने रहने वाले प्रशांत किशोर वोटिंग के दिन से ही नजर नहीं आ रहे हैं और पार्टी कार्यालय में सन्नाटा पसरा हुआ है। हालांकि, जेडीयू की ओर से अनंत सिंह पर कार्रवाई किए जाने के बाद जन सुराज पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता कुमार सौरभ सिंह ने अधिकारिक बयान जारी किया है। उन्होंने इस पूरे मामले को जेडीयू और एनडीए का अंदरूनी विषय बताया है।

जेडीयू के एमएलसी नीरज कुमार ने केंद्रीय मंत्री ललन सिंह के खिलाफ मोर्चा खोला

जेडीयू के एमएलसी नीरज कुमार ने पार्टी के वरिष्ठ नेता और केंद्रीय मंत्री ललन सिंह के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। उन्होंने साफ कहा कि ललन सिंह से आशीर्वाद या बधाई लेने वे नहीं जाएंगे। इस पूरे चुनावी प्रकरण में आखिर उनका गुनाह क्या था, जो उन्हें इतनी परेशानियों का सामना करना पड़ा। उनके माता-पिता ने सिखाया है कि कोई कर्ज ले तो उसे लौटा देना चाहिए, और वे राजनीति के इस कर्ज को सूद समेत वापस करेंगे। अब राजनीति में इस तरह के संवाद को धमकी ही माना जाता है। मतलब साफ है कि चुनाव के दौरान उन्हें जो भी तकलीफ या परेशानी वाया अनंत सिंह हुई उन सारी शिकायतों का पुलंदा राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतीश कुमार को सौंपेंगे और न्याय की गुहार लगाएंगे।

संजय इन और ललन आउट होंगे

नीरज कुमार के बयान को राजनीतिक गलियारों में गंभीरता से लिया जा रहा है। सूद समेत लौटाने की बात कह कर राजनीतिक गलियारों में एक बार फिर संजय इन और ललन आउट की थ्योरी चल पड़ी है। सवाल उठता है कि न्याय की प्रक्रिया में क्या ललन सिंह से मंत्री पद वापस लिए जाएंगे? क्या संजय झा का मंत्री बनना तय है? ये सारे सवाल उठने लगे हैं? हालांकि अनंत सिंह पर कार्रवाई के बाद बड़ी तेजी से चर्चा चल पड़ी थी कि जदयू के सांगठनिक ढांचे में आमूल- चूल परिवर्तन होने जा रहा है। एकदम से नया जदयू दिखेगा और उसमें ललन सिंह नहीं होंगे। समय के बारे में कहा जा रहा हे कि 15 दिनों के भीतर नया जदयू दिख जाएगा।



प्रकरण में ललन सिंह की भूमिका

दरअसल वाया अनुज और अनंत सिंह केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह परोक्ष रूप से तब सामने आए जब जेडीयू के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा ने उन्हें इस मामले को सुलझाने भेजा। जदयू के भीतरखाने की बात करें तो जदयू कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा को बात तब बुरी लगी जब ललन सिंह ने मीडिया के सामने बयान दिया कि वर्ष 2025 विधानसभा चुनाव के दौरान अनंत सिंह ने जो आरोप नीरज कुमार पर लगाए थे उसे सही करार दिया और कहा कि यहां प्रदेश नेतृत्व से गलती हुई। ललन सिंह ने यह सीधा आरोप प्रदेश अध्यक्ष उमेश कुशवाहा पर लगाया। ललन सिंह ने कहा कि कि अनंत सिंह जो कुछ कर रहे हैं वह क्रिया के विरुद्ध प्रतिक्रिया है। लेकिन उन्हें समझाया गया और कहा गया है कि पार्टी के विरोध में वे कोई बयान नहीं देंग।

जदयू का अंदरूनी घमासान नये मोड़ पर

राजनीतिक विश्लेषक कहना है कि एमएलसी चुनाव में जीत के बाद नीरज कुमार का ललन सिंह को लेकर दिया गया बयान जदयू के अंदरूनी घमासान को एक नया मोड़ देता है। चुनाव प्रचार के दौरान नीरज कुमार लगातार अनंत सिंह पर हमलावर रहे, लेकिन परिणाम आने के बाद अब वह ललन सिंह की भूमिका पर भी सवाल उठाते दिख रहे हैं। ललन सिंह ने कभी अनंत सिंह के संदर्भ में कहा था कि राजनीति में क्रिया के विपरीत प्रतिक्रिया होती है। अब नीरज कुमार का बयान भी उसी प्रतिक्रिया के तौर पर देखा जा सकता है। अनंत सिंह के हमले को जदयू के भीतर एक ऐसे गुट की राजनीतिक लड़ाई के रूप में भी देखा जा सकता है, जिसके शीर्ष पर ललन सिंह खडे हैं। उसी तरह अब जब नीरज कुमार ललन सिंह पर हमलावर हो रहे हैं, वो एक ऐसे गुट के मुखौटा दिख रहे हैं, जिसके शीर्ष पर संजय झा हैं। यदि ऐसा है, तो यह टकराव दो नेताओं के बीच का विवाद नहीं, बल्कि जदयू के भीतर दो राजनीतिक गुटों के बीच वर्चस्व की लड़ाई का संकेत हो सकता है। रामबंधु वत्स के मुताबिक, नीरज कुमार के इस बयान से संकेत मिलता है कि जदयू का अंतर्कलह अब केवल अनंत सिंह पर कार्रवाई तक सीमित रहने वाला नहीं है, बल्कि पार्टी के शीर्ष नेताओं तक पहुंच गया है। संभव है जदयू की तरफ से केंद्र में संजय झा मंत्री बन जाएं।



अंतरात्मा की आवाज पर अनुज सिंह को दिया था समर्थन

जन सुराज के प्रवक्ता ने बयान में कहा कि अनंत सिंह ने अपने राजनीतिक अतीत और अंतरात्मा की आवाज सुनकर पटना स्नातक सीट से जन सुराज उम्मीदवार अनुज सिंह का समर्थन किया था। उन्होंने कहा कि जन सुराज के प्रत्याशी को मिले इस समर्थन से एनडीए गठबंधन का असहज होना स्वाभाविक था। पार्टी का मानना है कि अनंत सिंह पर हुआ ये निष्कासन एक अनुशासनात्मक और स्वाभाविक कार्रवाई के रूप में देखा जाना चाहिए।



Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_SanjayS

जिद... सच की

भोजन की बर्बादी को रोकना जरूरी

भोजन मनुष्य के लिए सबसे आवश्यक वस्तु है। पर मानव कभी-कभी उसकी उपयोगिता नहीं समझता है। उसका अनादर करता है। भोजन बर्बादी की समस्या संसार में बड़ी आफत के रूप में उभरी है। ऐसे तमाम देश हैं जहां अन्न का उत्पादन शून्य है और दूसरे देशों के उत्पाद-भोजन पर ही निर्भर हैं, बावजूद इसके बेहताशा भोजन बर्बाद करते हैं। हाल ही में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण की 'फूडवेस्टाइज इंडेक्स रिपोर्ट-2026' सामने आई जिसमें दुनिया भर में 1.05 अरब टन भोजन बर्बाद होता बताया गया जिससे नई किस्म की न सिर्फ बीमारियां-वायरस फैले, बल्कि पर्यावरण भी दूषित हुआ। भारत में पिछले 10 वर्षों में अन्न उत्पादन 90 मिलियन मीट्रिक टन पिछले एक दशक से ज्यादा हुआ है। धरती पर मात्र भारत ही एक ऐसा मुल्क है जो करीब 76 देशों को विभिन्न किस्म का अन्न सप्लाई करता है जिसमें चीनी, दालें, चावल, मखाने, सरसों और सब्जियां प्रमुख रूप से शामिल हैं। भोजन मूलभूत आवश्यकताओं के अलावा, प्रत्येक इंसान का बुनियादी अधिकार भी है।

भोजन अनमोल है जिसका सम्मान करना सभी का कर्तव्य है। आज 'विश्व खाद्य दिवस' है जो सालाना 16 अक्टूबर को पूरे संसार में इस मकसद से मनाया जाता है कि अन्न की बर्बादी को रोकने के लिए जनमानस को जागरूक किया जाए। नवंबर 1979 को संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन के 20वें सम्मेलन में खाद्य दिवस को मनाने का निर्णय हुआ जिसका पहली बार आयोजन वर्ष 1981 में हुआ। दुनिया में भूख से बद्‌ते कुपोषण पर नियंत्रण को ध्यान में रखकर संयुक्त राष्ट्र ने वैश्विक संघों को चेताया था। ये दिवस इस बात पर ज्यादा जोर देता है कि हमें थाली में उतना ही भोजन परोसना चाहिए, जितने की पेट को जरूरत हो। ज्यादा भोजन लेंगे तो निश्चित रूप से बर्बाद ही होगा। फूड इंडेक्स पर यूएनईपी-2024 की रिपोर्ट के मुताबिक हिंदुस्तान में सालाना करीब 7.8 करोड़ टन भोजन बर्बाद होता है, जिसका औसत लगभग 21.4 करोड़ किलोग्राम प्रतिदिन आंका गया। विश्व खाद दिवस-2025 की थीम थी 'बेहतर भोजन और बेहतर भविष्य साथ-साथ' जो एग्रीफूड सिस्टम को बदलने में वैश्विक सहयोग की शक्ति को उजागर करती है। अब पूरे वैश्विक समुदाय की यह जिम्मेदारी है कि वह भोजन को बर्बाद होने से बचाए।

"भोजन बर्बादी की समस्या संसार में बड़ी आफत के रूप में उभरी है। ऐसे तमाम देश हैं जहां अन्न का उत्पादन शून्य है और दूसरे देशों के उत्पाद-भोजन पर ही निर्भर हैं, बावजूद इसके बेहताशा भोजन बर्बाद करते हैं। हाल ही में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण की 'फूडवेस्टाइज इंडेक्स रिपोर्ट-2026' सामने आई जिसमें दुनिया भर में 1.05 अरब टन भोजन बर्बाद होता बताया गया जिससे नई किस्म की न सिर्फ बीमारियां-वायरस फैले, बल्कि पर्यावरण भी दूषित हुआ।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

कृषि मॉडल में बदलाव से ही टिकाऊ समाधान

इंदरजीत सिंह

वर्ष 1960 के दशक में हरित क्रांति की शुरुआत हुए छह दशक से अधिक समय बीत चुका है। इसी दौर में 1966 में हरियाणा एक अलग राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। गठन के बाद हरियाणा में बुनियादी ढांचा विकास को प्राथमिकता दी गई व हरित क्रांति को प्रोत्साहन मिला। इसके परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन व उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। समय के साथ हरित क्रांति के विकास मॉडल की सीमाएं उजागर होने लगीं। कृषि उत्पादन में वृद्धि की संभावनाएं सिमटने लगीं तथा कई तरह के नकारात्मक परिणाम भी सामने आए। असल में तो हरित क्रांति का उद्देश्य ही पर्याप्त भूमि सुधारों के बिना कृषि क्षेत्र व फसलों का बाजारीकरण करना था। ये अलग बात है कि इससे फायदा हुआ। वर्ष 1990 के दशक में नव-उदारवादी और कॉर्पोरेट समर्थक नीतियां अपनाने के बाद कृषि संकट और गहरा गया।

आज कृषि क्षेत्र को एक ऐसे वैकल्पिक विकास मॉडल की जरूरत है जो किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण की रक्षा भी कर सके। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अंधाधुंध इस्तेमाल से मिट्टी की उर्वरता और गुणवत्ता पर गंभीर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। भारत के मरुस्थलीकरण एवं भूमि क्षरण एटलस, 2021 के मुताबिक हरियाणा की 3.64 लाख हेक्टेयर से अधिक कृषि भूमि क्षरण व और मरुस्थलीकरण की समस्या से प्रभावित थी। भूजल का तेजी से गिरता स्तर, सिंचाई की दोषपूर्ण पद्धतियां और गेहूं-धान का एकांगी फसल चक्र कृषि की स्थिरता के सामने गंभीर चुनौती बन गए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-कृषि उद्देश्यों के लिए भूमि अधिग्रहण के कारण खेती का क्षेत्रफल भी घट रहा है। उपजाऊ कृषि भूमि का इस तरह लगातार कम होना खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण आजीविका के लिए चिंताजनक है। जलवायु परिवर्तन की बढ़ती चुनौती कृषि संकट को और गंभीर बना रही है। बेमौसम बारिश, अत्यधिक गर्मी और अन्य चरम मौसमी घटनाओं से फसलों को बार-बार नुकसान हो रहा है। ऐसी परिस्थितियों में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की किसानों को राहत देने में प्रभावशीलता पर भी सवाल उठे हैं।

इसके अलावा न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि खेती की बढ़ती लागत के अनुरूप नहीं। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि अर्थशास्त्र विभाग के हालिया अध्ययनों में किसानों को होने वाले नुकसान की गंभीर तस्वीर सामने आई है। खरीफ फसलों की वर्कशाप में जानकारी दी गई



कि धान की पीआर किस्म की खेती में किसान का प्रति एकड़ घाटा करनाल में 4285 रुपये आंका गया। बीटी कपास में किसान को प्रति एकड़ औसत घाटा 15,143 रुपये था, जबकि मक्का की खेती में 1229 रुपये प्रति एकड़ रहा। कपास जैसी महत्वपूर्ण फसल की काश्त की स्थिति तो और भी तेजी से गिरावट पर है। वर्ष 2025-26 में ही कपास के रकबे में 2.82 लाख हेक्टेयर की गिरावट दर्ज की गई। पिछले सात वर्षों में कपास की खेती के क्षेत्रफल में 65 प्रतिशत की कमी आई है। इसका एक प्रमुख कारण बी टी कपास पर गुलाबी सूंडी के प्रकोप से फसल बर्बादी है। बहरहाल, ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी, कुपोषण, भूमिहीनता, कर्ज और बेरोजगारी की समस्याएं बढ़ी हैं। खाद की कमी, मंडी में फसल बेचने की दिक्कतें और खरीद संबंधी बाधाएं अब किसानों के विरोध-प्रदर्शनों के प्रमुख मुद्दे हैं। हरियाणा और पंजाब में कृषि का मौजूदा मॉडल अब टिकाऊ नहीं रहा। यह स्थिति छोटे और सीमांत किसानों के लिए अधिक संकटपूर्ण है। हरियाणा में छोटे और सीमांत किसान कुल कृषि परिवारों का लगभग 70 प्रतिशत हैं। इनकी समस्याओं की अनदेखी की तो खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता बनाए रखना कठिन हो सकता है। इसके साथ ही कुछ जानकारों की चर्चाओं में सामने आया कि सरकारी खरीद व्यवस्था लगातार कमजोर हुई है। यह भी कि भंडारण क्षमता के निवेश में लगातार कमी की गयी। निजी क्षेत्र को भंडारण क्षेत्र में अनुमति देने का खमियाजा किसानों और कृषि मजदूरों को भुगतना पड़ रहा है। वे मनमर्जी से बाजार को संचालित करेंगे और सार्वजनिक वितरण प्रणाली कमजोर हो जाएगी। इस संकट से उबरने के लिए एक व्यापक, किसान-हितैषी और टिकाऊ वैकल्पिक कृषि नीति अपनाना समय की मांग है।

तत्काल राहत के लिए उन किसानों के कर्ज माफ किए जाने चाहिए जो उन्हें चुकाने में असमर्थ हैं, खेती की लागत कम करने के लिए प्रभावी कदम उठाए जाने चाहिए, स्वामीनाथन आयोग की सिफारिश के अनुरूप सी 2+50 प्रतिशत के फार्मूले पर न्यूनतम समर्थन मूल्य सुनिश्चित किया जाना चाहिए। साथ ही उपजाऊ कृषि भूमि के अधिग्रहण पर प्रभावी रोक लगे।

वह लकीर जिसने मुझे हरियाणवी बनाया

राजेश खुल्लर



मैं तीन साल का था, जब भारत के नक्शे पर एक नई, टेढ़ी-मेढ़ी लकीर खींची गई। तीन साल, दो महीने और एक दिन-ठीक वैसे ही जैसे बच्चे अपनी उम्र गिनते हैं, यह जानते हुए कि हम बड़े होकर भूल जाते हैं कि हर एक दिन मायने रखता है। और उस दिन ने सच में मायने रखा। 1 नवंबर 1966 को, मेरे माता-पिता ने खुशी-खुशी मुझे बताया कि अब हम हरियाणवी हैं। मैंने इसे ऐसे लिया जैसे कोई बच्चा एक तोहफा पाकर करता है। बहुत बाद में मुझे समझ आया—इसे बनाने में मेरे माता-पिता ने यह करके अपना योगदान दिया। हरियाणा दिवस और पंजाब दिवस एक ही तारीख को आते हैं, जैसे अलग-अलग घरों में पले-बढ़े जुड़वां बच्चे। हर हरियाणवी पंजाब की खबरें ऐसे पढ़ता है जैसे कोई अपने बड़े भाई की खबरें पढ़ रहा हो—जन्मजात स्नेह के साथ, थोड़ी-सी टीस के साथ और मन ही मन महसूस होने वाले थोड़े से गर्व के साथ।

हां, गर्व, क्योंकि किसी को उम्मीद नहीं थी कि छोटा भाई (हरियाणा) अपने पैरों पर खड़ा हो पाएगा। हरियाणा उस समय एक शुष्क और धूल भरा इलाका था—जिसे कमतर माना जाता था, जहां न के बराबर उद्योग-धंधे, सड़कें थीं और नहरें भी नहीं थीं, और न ही पैसा था। कहा गया था कि कुछ ही सालों में यह राज्य असफल होकर रह जाएगा, कर्मचारियों को वेतन तक नहीं दे पाएगा। यह लकीर 1961 की जनगणना आधारित थी। इसी जनगणना के आंकड़ों से यह तय होना था कि पूर्वी पंजाब के मैदानी इलाकों में हर गांव और शहर का भविष्य का पता क्या होगा। जब जनगणना करने वाले अधिकारी आए तो मेरे माता-पिता जो कि पश्चिमी पंजाब से आकर यहां बसे थे ने अपनी मातृभाषा हिंदी बताई। यह प्यार से बोला गया झूठ था; एक ऐसे राज्य के लिए दिया गया वोट, जिसका उस समय कोई अस्तित्व ही नहीं था। जब हरियाणा बना, तब मैंने अंबाला शहर के एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ाई शुरू की थी, जहां हर कोई पंजाबी बोलता था। कुछ ही समय बाद, हिंदी में किताबें आ गईं एक ऐसी भाषा जिसे मेरे शिक्षकों और मैंने एक साथ मिलकर सीखा। बाद में, कॉलेज में पढ़ाई का माध्यम अंग्रेजी हो गया। कई सालों तक, किसी भी सवाल का जवाब देने के लिए मुझे दिमाग में तीन कदम उठाने पड़ते थे—पहले पंजाबी में सोचना, उसका हिंदी में अनुवाद, और अंत में अंग्रेजी में लिखना।

और फिर भी, परीक्षा के लिए समय सिर्फ तीन घंटे ही मिलता था। इस बीच, मेरे पिता अपना उर्दू दैनिक अखबार हिंद समाचार पढ़ते रहे, सेना में बतौर सैनिक भर्ती होकर वे तरक्की पाकर नायब सूबेदार के पद तक पहुंचे थे। मेरी मां अपने दो बेटों की परवरिश के दौरान संस्कृत के ग्रंथों का पाठ करती थीं। इस तरह, मैं चार लिपियों और पांच भाषाओं और उनके साहित्य—के बीच पला-बढ़ा। कोई बहन न होने के कारण, मैं अपनी मां के रोजमर्रा के कामों में हाथ बंटाने लगा और वहीं से मैंने एक बहुत ही कीमती गुण सीखा कोमलता। हम लोग गरीब थे, और उस समय हरियाणा भी गरीब था।

मार्च 1977 में, जब मैं 13 साल का था और अभी मैट्रिक भी पास नहीं की थी, मैंने अपने ही हाई स्कूल के प्राइमरी सेक्शन में तीन महीने तक गणित पढ़ाया। इसके लिए मुझे हर महीने 250 रुपये मिलते थे। यह उस पूरी स्थिति का एक छोटा-सा प्रारूप था, जिससे उस समय पूरा राज्य गुजर रहा था— यानी, पूरी तरह स्थापित होने के लिए पहले कड़ी मेहनत करना, क्योंकि कोई और रास्ता ही नहीं था। बाद में, जब मैंने एक गर्ल्स हाई स्कूल और एक कॉलेज में पढ़ाया, तो मुझे समझ आया कि युवाओं के भीतर कुछ बनने की कितनी तीव्र आग होती है। इसके बाद मैं रेलवे में गया, फिर आईपीएस और अंत में हरियाणा कैडर में आईएएस अधिकारी बना। अपनी फील्ड नियुक्तियों के दौरान, विकास मेरे लिए सिर्फ एक शब्द नहीं था, बल्कि एक ऐसा काम था जिसे मैंने खुद किया या करवाया है, शहरों में, गांव-देहात में। यह काम कोसली से शुरू हुआ— जहां मैंने बतौर एसडीएम शुरुआत की थी और रोहतक तक चला, जहां पर एक दशक बाद मैं उप आयुक्त रहा। हर दिन मुझे दूसरों की मदद करने, लोगों का दुख कम करने, समस्याएं सुलझाने और वहां की स्थानीय बोली सीखने के मौके मिलते थे। राज्य मुख्यालय में काम करते हुए मैंने दूसरा पहलू सीखा = एक राज्य का निर्माण फाइल-दर-फाइल प्रक्रिया से गुजरकर होता है, उन विचारों से जिन्हें ऐसे लोगों ने लिखा और हस्ताक्षर किया होता है, जिनको पर्दे के पीछे रहकर काम करने को तैयार किया जाता है। ऐसा ही एक विचार 1994 में आया— अपनी बेटी, अपना धन—जिसके तहत हर नवजात बच्ची के नाम पर सरकार की ओर से एक छोटा बचत निवेश किया जाए। इस विचार की जड़ मेरी इकलौती बहन से जुड़ी थी, जो मुझसे पहले पैदा हुई थी, लेकिन कुछ महीनों से ज़्यादा जीवित नहीं रह सकी।

मैं भाग्यशाली रहा कि मुझे बंसीलाल और ओम प्रकाश चौटाला के कार्यकाल में निदेशक जनसंपर्क के रूप में काम करने का मौका मिला। आगे चलकर, मैं ओम प्रकाश चौटाला, मनोहर लाल और नायब सिंह सैनी के कार्यालयों में और भी गहराई से जुड़ा रहा। उन वर्षों ने मुझे एक बहुत महत्वपूर्ण सबक सिखाया— सीजर की पत्नी वाला सिद्धांत सरकार के फैसले न केवल लोगों के लिए अच्छे होने चाहिए, बल्कि वे अच्छे दिखने भी चाहिए। फरीदाबाद और गुरुग्राम (तब गुड़गांव) नगर निगमों में बतौर कमिश्नर बिताए चार सालों ने मुझे चीजों को उच्चस्तर पर देखने में और ज़मीनी हकीकत के बीच रहने वाले अंतरों को बहुत करीब से दिखाया।

ईको फ्रेंडली तरीके से मनाएं दिवाली

घर सजावट में काम आएंगे ये आइडियाज



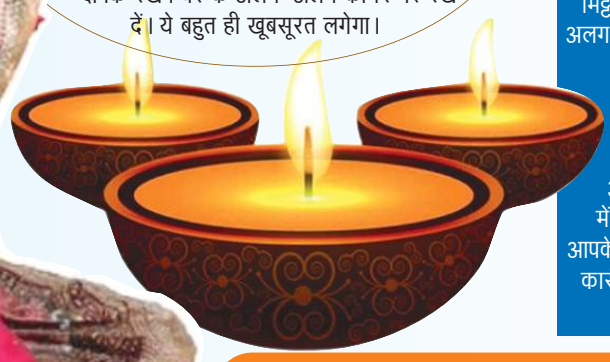
दिवाली का त्यौहार नजदीक आ रहा है। जहां इसे लेकर लोगों में जोश और उमंग है वहीं बढ़ते प्रदूषण को लेकर टेंशन भी। दिल्ली- एनसीआर में दिवाली के पहले ही हालात इतने खराब हैं और दिवाली के बाद तो स्थिति और ज्यादा बिगड़ने के आसार हैं। ऐसे में दिवाली के त्योहार को ईको-फ्रेंडली तरीके से मनाएं और प्रदूषण को बढ़ने से रोकने में मदद करें। इसके लिए रंगोली बनाने से लेकर लाइट्स व दीये की सजावट, उपहारों का चयन हर एक चीज़ का ध्यान रखना होगा। दिवाली पर इस्तेमाल होने वाले पटाखे, केमिकल्स और प्लास्टिक लंबे समय तक प्रदूषण बने रहते हैं, ऐसे में आपकी छोटी सी पहल बहुत बड़ा योगदान साबित हो सकती है। इस दिवाली न केवल अंधकार पर प्रकाश की विजय का जश्न मनाएं बल्कि पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव भी डालें। दीयों की सजावट के इन इको-फ्रेंडली आइडियाज के साथ, आप अपने घर को एक विवेकपूर्ण, हरित चमक से रौशन कर सकते हैं, जिससे यह त्यौहार वास्तव में खास बन जाएगा।

फूल और पत्तियों के कंदील

अपने गॉर्डन में जाएं और फूल और पत्तियों को इकट्ठा करें। उस पर गोंद की एक पतली परत चढ़ाएं और नॉर्मल कागज का इस्तेमाल से इससे सुंदर कंदील बना सकते हैं।

ग्लास जार के दीए इस्तेमाल करें

घर में पड़े पुराने कांच के जार को घर को सजाने और जगमगाने में इस्तेमाल करें, जो बहुत ही टिकाऊ ऑप्शन है। जार को अच्छी तरह से साफ करें लें और इसमें चमकीले रंग भर दें। इसके अंदर एक टीलाइट या तेल का दीपक रखें। घर के अलग-अलग कॉर्नर पर रख दें। ये बहुत ही खूबसूरत लगेगा।



मिट्टी के बर्तन से सजाएं

दीयों के अलावा दिवाली के दौरान मिट्टी के तरह-तरह के बर्तन भी मिलते हैं, तो आप इन्हें भी सजावट के लिए इस्तेमाल में ला सकते हैं। मिट्टी के बर्तनों को अलग-अलग रंगों से सजाकर या उस पर तरह-तरह की कलाकृतियां बनाकर इसे बिल्कुल नया रूप दे सकते हैं। मिट्टी के दीए और बर्तन न सिर्फ देखने में सुंदर लगते हैं, बल्कि आपके इस च्वॉइस से स्थानीय कारीगरों को भी बहुत बड़ा सपोर्ट मिलता है।

नारियल के छिलके के दीए

नारियल के खोपरे को शानदार दीयों में बदल कर आप घर की सुंदरता बढ़ा सकते हैं। सबसे पहले खोल को अंदर और बाहर से साफ कर लें। उस पर कोई चमकीला या रंग-बिरंगा कपड़ा बांध दें। एक छोटा होल्डर रखकर उस पर तेल का दीया या मोमबत्ती रख कर जलायें। नारियल के खोल के दीए बेहद आकर्षक लगते हैं। साथ ही पर्यावरण के अनुकूल भी होती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में लकड़ी की जगह नारियल के छिलके को जलाकर खाना बनाया जाता है। लकड़ी को जलाने में परेशानी होती है लेकिन नारिलय के छिलके वाली जट्टे को आसानी से जलाया जा सकता है। पहले छिलके में आग लगाते हैं फिर स्वतः लकड़ी में आग लग जाती है। इस प्रकार नारियल के छिलके बड़े काम की चीज है, इसे फेंके नहीं इस्तेमाल करें।



इको-फ्रेंडली पटाखे

ये पारंपरिक पटाखों का एक सुरक्षित और पर्यावरण-अनुकूल विकल्प हैं, जो त्योहारों की खुशी को बिना प्रदूषण फैलाए दोगुना कर देते हैं। बाजार में मुख्य रूप से दो तरह के इको-फ्रेंडली विकल्प मिलते हैं: ग्रीन क्रैकर्स , जो हवा में हानिकारक गैसों को कम करते हैं, और बीज पटाखे, जिन्हें जलाने के बजाय मिट्टी में बोया जाता है ताकि नए पौधे उग सकें। ये दिखने और आवाज में सामान्य पटाखों जैसे ही होते हैं, लेकिन पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुंचाते है।



हंसना मना है

एक अंकल ने एक बच्चे से पूछा- पढ़ाई कैसी चल रही है... बच्चे ने जवाब दिया - अंकल, समंदर जितना सिलेबस है, नदी जितना पढ़ पाते हैं, बाल्टी भर याद होता है, गिलास भर लिख पाते हैं, चुल्लू भर नंबर आते हैं, उसी में डूब कर मर जाते हैं..

कर्मचारी - हेलो सर, मुझे आतंकवादियों ने पकड़ लिया है, दोनों हाथ काट दिए, आंख फोड़ दी, किडनी निकाल ली... बॉस - देख ले... हो सके तो आजा, आज ऑडिट है...

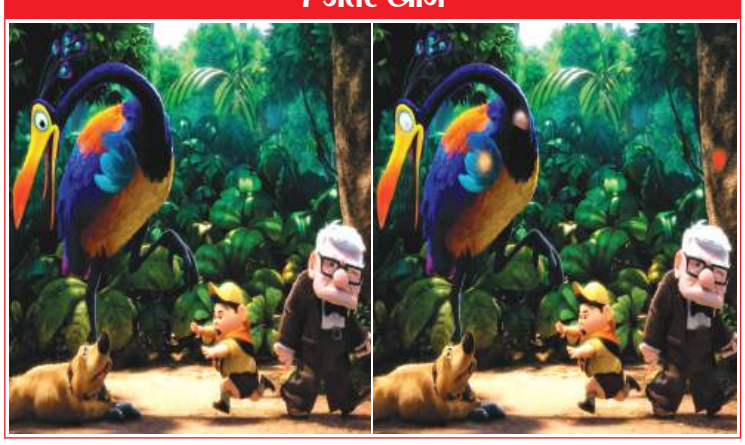
एक औरत ने अपनी पड़ोसन से पूछा- क्या तुम्हें ऐसा आदमी पसंद है, जिसके सारे बाल सफेद हों और डाई करके जवान बनने की कोशिश करता हो... चार कदम चलने पर जिसकी सांस फूल जाती हो, दफ्तर से घर आकर शराब पीना शुरू कर देता हो ... पड़ोसन - नहीं, हरगिज नहीं.... भला ऐसे मर्द को कौन औरत पसंद करेगी... औरत- तो फिर मेरे पति के पीछे क्यों पड़ी हो...

एक हवाई जहाज तूफान में फंस गया... पायलट बोला- किसी को बचने की दुआ आती है क्या... एक बाबा बोले- हां, मुझे आती है... पायलट - ठीक है बाबा, आप दुआ कीजिए, क्योंकि एक पैराशूट कम है... बाबा बेहोश...

कहानी | हंस और मूर्ख कछुआ

एक जंगल के बीचों-बीच एक तालाब था, जहां जानवर आकर अपनी प्यास बुझाया करते थे। उसी तालाब में एक कछुआ भी रहता था। वह फालतू की बातें बहुत करता था, इसलिए सभी जानवरों ने उसका नाम बातूनी कछुआ रखा हुआ था, लेकिन दो हंस उसके बहुत अच्छे दोस्त थे, जो हमेशा उसका भला चाहते थे। एक बार गर्मी के मौसम में तालाब का पानी धीरे-धीरे सूखने लगा। जानवर पानी पीने के लिए तरसने लगे। हंसों ने कछुए से कहा कि इस तालाब का पानी कम हो रहा है और हो सकता है कि यह बहुत जल्दी सूख जाए। तुम्हें यह तालाब छोड़कर कहीं और चले जाना चाहिए। इस पर कछुए ने कहा कि मैं यह तालाब छोड़कर कैसे जा सकता हूं और यहां आसपास कोई तालाब भी नहीं है, लेकिन हंस अपने दोस्त की मदद के लिए एक तरकीब निकाली। दोनों हंसों ने कहा कि हम एक लकड़ी लेकर आते हैं, तुम अपने मुंह से उसे बीच में से पकड़ लेना और लकड़ी का एक-एक सिरा हम दोनों पकड़कर तुम्हें यहां से दूर एक बड़े तालाब में ले जाएंगे। उस तलाब में बहुत सारा पानी है और वो कभी नहीं सूखता। कछुआ उनकी बात मान गया और हंसों के साथ जाने के लिए तैयार हो गया। उड़ने से पहले हंसों ने उसे चेतावनी दी कि वह रास्ते में कुछ भी न बोले। जब हम बड़े तालाब पर पहुंच जाएंगे, तब ही उसे जो बोलना है बोल सकता है। कछुए ने हां में उत्तर दिया और लकड़ी को पकड़ लिया। वो दोनों हंस लकड़ी को पकड़कर उड़ चले। वो उड़ते हुए एक गांव के ऊपर से निकले। गांव वालों ने ऐसा पहली बार देखा था। सभी तालियां बजाने लगे। यह देखकर कछुए से रहा नहीं गया और बोला कि नीचे क्या हो रहा है? जैसे ही उसने बोलने के लिए मुंह खोला उसके मुंह से लकड़ी छूट गई और वो नीचे गिर गया। ऊंचाई से नीचे गिरने की वजह से कछुआ मर गया और हंस अफसोस करते हुए वहां से चले गए।

7 अंतर खोजें



जानिए कैसा रहेगा कल का दिन



पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष



दफ्तर में सहकर्मियों की मदद से काम समय पर पूरे होंगे। व्यापारिक फैसलों में दूरदर्शिता काम आएगी, लाभ होगा। धर्म-कर्म और पारिवारिक कार्यों में मन लगेगा।

वृषभ



कार्यक्षेत्र में सावधान रहें, सहकर्मियों से विवाद न करें। व्यापार में रिस्क लेने से बचें, पुराना काम संभालें। ससुराल पक्ष से कोई बातचीत हो सकती है, शांत रहें।

मिथुन



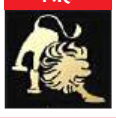
साझेदारी के कार्यों में बड़ी सफलता मिलने की संभावना है। व्यापार में नए ग्राहक जुड़ेंगे, बिक्री में बढ़ोतरी होगी। दांपत्य जीवन सुखद और आनंदमय रहेगा।

कर्क



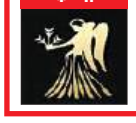
विरोधी शांत रहेंगे, आप अपने काम पर ध्यान केंद्रित करेंगे। व्यवसाय में परिश्रम का पूरा फल मिलेगा, लाभ होगा। मामा पक्ष से सहयोग मिलेगा, रिश्ते सुधरेंगे।

सिंह



बौद्धिक क्षमता से मुश्किल काम भी आसानी से हल करेंगे। व्यापार में नए सौदे तय होंगे, अच्छा मुनाफा मिलेगा। प्रेम संबंधों में स्पष्टता और विश्वास बढ़ेगा।

कन्या



दफ्तर में शांतिपूर्वक काम निपटाएं, तनाव न लें। संपत्ति या वाहन से जुड़े सौदों में लाभ संभव है। पारिवारिक जरूरतों पर ध्यान दें, माहौल सुखद रखें।

तुला



आपके पराक्रम और मेहनत की दफ्तर में प्रशंसा होगी। व्यापारिक यात्राएं सफल रहेंगी, नए रास्ते खुलेंगे। भाई-बहनों का सहयोग हिम्मत और मनोबल बढ़ाएगा।

वृश्चिक



कार्यस्थल पर वाणी की मधुरता से काम बन जाएंगे। व्यापार में लाभ के अवसर मिलेंगे, बचत बढ़ेगी। परिवार में कोई मांगलिक चर्चा हो सकती है।

धनु



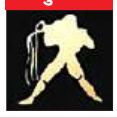
नई शुरुआत के लिए दिन शुभ है, उत्साह बना रहेगा। व्यापार में नए विचार अमल में लाएं, फायदा होगा। व्यक्तिगत संबंधों में नजदीकी और विश्वास बढ़ेगा।

मकर



काम के सिलसिले में दूर की यात्रा हो सकती है। व्यापारिक गतिविधियों में सावधानी से निवेश करें। किसी बाहरी व्यक्ति के कारण मतभेद न होने दें।

कुम्भ



दफ्तर में आपकी कार्यकुशलता की हर तरफ चर्चा होगी। व्यापार में बड़ा आर्थिक लाभ होने के मजबूत योग हैं। मित्रों के साथ मनोरंजक समय बिताने का मौका मिलेगा।

मीन



पद और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, पदोन्नति संभव है। व्यवसाय में रुकी हुई योजनाएं पुनः चालू होंगी। माता-पिता का स्नेह और पूरा आशीर्वाद मिलेगा।

एआई डीपफेक का शिकार हुई रूपाली गांगुली

रूपाली गांगुली ने बॉम्बे हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। उन्होंने आरोप लगाया है कि कई ऑनलाइन पोर्टल उनकी तस्वीरों और अन्य कंटेंट का इस्तेमाल बिना अनुमति कर रहे हैं। इतना ही नहीं, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की मदद से उनकी नकली तस्वीरें बनाई जा रही हैं और कुछ वीडियो के साथ भी छेड़छाड़ की गई है। रूपाली का कहना है कि इस तरह तैयार किए गए कंटेंट को कुछ ऐसी वेबसाइटों पर इस्तेमाल किया जा रहा है, जहां अश्लील और आपत्तिजनक सामग्री दिखाई जाती है। अभिनेत्री ने अपनी याचिका में इसे अपने पर्सनैलिटी राइट्स का उल्लंघन बताया। उनका कहना है कि किसी व्यक्ति की पहचान, तस्वीर, आवाज और छवि का इस्तेमाल उसकी सहमति के बिना नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने अदालत से इस मामले में दखल देने की मांग की है। इस याचिका पर बॉम्बे हाईकोर्ट में 4 नवंबर को सुनवाई होगी। इस मामले को जस्टिस माधव जामदार की बेंच सुनेगी। रूपाली से पहले कई दूसरी अभिनेत्रियां भी अपनी तस्वीरों और पहचान के गलत इस्तेमाल के खिलाफ अदालत पहुंच चुकी हैं। हाल ही में अभिनेत्री सामंथा रुथ प्रभु ने भी बॉम्बे हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी। उन्होंने आरोप लगाया था कि कई वेबसाइट और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म उनकी तस्वीरों, आवाज और पहचान का इस्तेमाल करके एआई से नकली वीडियो, मॉर्फ की गई तस्वीरें और अश्लील कंटेंट तैयार कर रहे हैं। इस मामले में कोर्ट ने सामंथा को अंतरिम राहत दी थी। अदालत ने गूगल, मेटा और दूसरे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म को उनकी पहचान का गलत इस्तेमाल करने वाले चिह्नित कंटेंट को हटाने का निर्देश दिया था। इससे पहले जुलाई में अभिनेत्री प्रीति जिंटा ने भी एआई से तैयार किए गए डीपफेक वीडियो और मॉर्फ तस्वीरों के खिलाफ बॉम्बे हाईकोर्ट का रुख किया था। उनकी याचिका पर सुनवाई करते हुए अदालत ने संबंधित ऑनलाइन प्लेटफॉर्म को आपत्तिजनक कंटेंट हटाने के निर्देश दिए थे।

'किंग' के गाने ने तोड़े सारे रिकॉर्ड, जवान को छोड़ा पीछे

शाहरुख खान का जादू एक बार फिर फैंस के सिर चढ़कर बोल रहा है। उनकी आने वाली फिल्म किंग का पहला गाना तू मिल जाए रिलीज होते ही छा गया है। शाहरुख के 61वें जन्मदिन के खास मौके पर 2 नवंबर, 2026 की आधी रात को रिलीज हुए इस रोमांटिक गाने को दर्शकों का जबरदस्त प्यार मिल रहा है।

रिलीज के महज 24 घंटों के अंदर ही तू मिल जाए ने सभी प्लेटफॉर्म पर 6 करोड़ से ज्यादा व्यूज हासिल कर लिए हैं। वहीं, सिर्फ यूट्यूब पर इस गाने को 3.63 करोड़ से अधिक बार देखा जा चुका है और इसे 4.3 लाख से ज्यादा लाइक्स भी मिल चुके हैं। इसी के साथ यह 24 घंटे में सबसे ज्यादा देखे जाने वाला भारतीय फिल्मी गाना बन गया है। खास बात यह है कि तू मिल जाए ने शाहरुख खान की ही ब्लॉकबस्टर फिल्म जवान के गाने जिंदा बंदा का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। जिंदा बंदा को रिलीज के पहले 24 घंटों में 3.46 करोड़ व्यूज मिले थे।



इसके अलावा तू मिल जाए ने गुज्जू पटाका (3.40 करोड़), जय श्री राम (3.22 करोड़) और राम सिया राम (3.21 करोड़) को भी पीछे छोड़ दिया है।

इस तरह शाहरुख खान ने अपने ही पुराने रिकॉर्ड को तोड़ते हुए एक नया इतिहास रच दिया है।

तुषार कपूर से मांगी गई पांच करोड़ की फिरौती

मुंबई क्राइम ब्रांच को शक है कि एक्टर तुषार कपूर को 5 करोड़ रुपये की मांग करने वाली धमकी भरी कॉल किसी ऐसे व्यक्ति ने की थी, जिसने खुद को लॉरेंस बिश्नोई गैंग से जुड़ा होने का झूठा दावा किया। बताया जा रहा है कि एक्टर को एक व्यक्ति का फोन आया, जिसने खुद को लॉरेंस बिश्नोई गैंग का सदस्य हैरी बॉक्सर बताया और 5 करोड़ रुपये की मांग की।

तुषार ने इसकी जानकारी मुंबई पुलिस को दी, जिसके बाद मामले की जांच एंटी-एक्सटॉर्शन सेल और क्राइम ब्रांच को सौंप दी गई। क्राइम ब्रांच की टेक्निकल टीम ने



धमकी भरी कॉल की ऑडियो रिकॉर्डिंग की जांच की और उसकी आवाज का मिलान अपने डेटाबेस में मौजूद हैरी बॉक्सर के आधिकारिक ऑडियो सैंपल से किया।

हालांकि, मुंबई क्राइम ब्रांच की शुरुआती जांच से पता चलता है कि यह कॉल फर्जी हो सकती है। कॉल करने वाले ने गोलमाल 5 एक्टर तुषार कपूर को डराने और उनसे पैसे ऐंठने के लिए लॉरेंस बिश्नोई गैंग के नाम और उसकी दहशत का इस्तेमाल किया होगा। यह घटना जुहू में अभिनेता टाइगर श्रॉफ से जुड़ी गोलीबारी की घटना के कुछ हफ्ते बाद सामने आई है, जिसकी जांच भी मुंबई क्राइम ब्रांच कर रही है। धमकी भरी कॉल के बारे में एक्टर की शिकायत मिलने के बाद यह मामला क्राइम ब्रांच के एंटी-एक्सटॉर्शन सेल को सौंप दिया गया।



अनुराग कश्यप की बढ़ीं मुश्किलें

सूरत शहर की एक अदालत ने सोमवार को फिल्म निर्माता-अभिनेता अनुराग कश्यप के खिलाफ जमानती वारंट जारी किया। यह वारंट पिछले साल सोशल मीडिया पर ब्राह्मण समुदाय के खिलाफ उनकी कथित आपत्तिजनक टिप्पणियों से जुड़े एक मामले में अदालत के सामने पेश न होने के कारण जारी किया गया है। अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट जे.वी. चौहान ने अनुराग के खिलाफ यह जमानती वारंट जारी किया और मामले की अगली सुनवाई 24 दिसंबर के लिए तय की। यह आदेश तब आया, जब 54 वर्षीय फिल्म निर्माता जो गैंग्स ऑफ वासेपुर और ब्लैक फ्राइडे जैसी प्रशंसित हिंदी फिल्मों के निर्देशन के लिए जाने जाते हैं। अदालत द्वारा समन जारी किए जाने के बावजूद अदालत में पेश नहीं हुए। मई में अदालत ने वकील कमलेश रावल (जो हिंदुत्व संगठनों बजरंग दल और विश्व हिंदू परिषद के कानूनी सलाहकार हैं) की एक अर्जी पर अनुराग कश्यप के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 192 (विभिन्न समूहों के बीच दुश्मनी को बढ़ावा देना), 352 (शांति भंग करने के इरादे से जानबूझकर अपमान करना) और 352 (2) (झूठी अफवाहें फैलाना) के तहत मामला दर्ज करने का निर्देश दिया था।

राधिका आप्टे ने तेलुगू कल्चर को कोसा!

राधिका आप्टे ने केवल चार तेलुगू फिल्मों में काम किया है, जिनमें से दो फिल्में नंदमुरी बालकृष्ण के साथ थीं। साउथ में शूटिंग के दौरान सेट पर पितृसत्ता का सामना करने के बारे में उन्होंने खुलकर बात की है। हाल ही के एक इंटरव्यू में, राधिका ने बताया कि उनके सबसे चुनौतीपूर्ण किरदार में उन्हें अपने मामा से शादी करनी थी, जिनका रोल उनसे काफी बड़े एक को-एक्टर ने निभाया था। जूम पर अपनी को-एक्ट्रेस कीर्ति सुरेश के साथ अक्का का प्रचार करते समय, राधिका से उनके करियर के सबसे चुनौतीपूर्ण किरदार के बारे में पूछा गया। उन्होंने जवाब दिया, मैंने एक तेलुगू फिल्म की थी, जिसमें मुझे अपने मामा से शादी करनी पड़ी थी। वह मेरे करियर का सबसे चुनौतीपूर्ण किरदार था। मुझे उस फिल्म की हर बात से नफरत थी। कीर्ति पहले तो हैरान रह गईं, लेकिन फिर जोर से हंस पड़ीं। उन्होंने हैरान होस्ट और दर्शकों को समझाया, तमिल और तेलुगू संस्कृति में ऐसा होता है, जहां लोग अपने मामा से शादी कर लेते हैं। हालांकि, राधिका ने बीच में ही बात काटते हुए कहा, हां, लेकिन मुझे एक काफी उम्रदराज एक्टर के साथ रोमांस करना था। वहां का माहौल और जगह काफी पितृसत्तात्मक (पुरुष-प्रधान) है। मेरे लिए, यह सबसे मुश्किल काम था। और फिर, इसी बीच मेरी मौत हो जाती है। उन्हें मुझे (अपने कंधे के ऊपर से) फेंकना था और फिर एक्शन करना था। मैं सोच रही थी कि राधिका आप्टे ने नहीं लिया फिल्म का नाम हालांकि एक्ट्रेस ने फिल्म का नाम नहीं बताया, लेकिन उनके बताए गए सीन्स से पता चलता है कि वह बोयापति श्रीनू की 2014 की फिल्म लेजेंड की बात कर रही हैं। फिल्म में उनका किरदार अपने मामा के बजाय अपने बावा (मामा के बेटे) के पीछे पड़ा रहता है।



गहलोत पर भजनलाल के आरोपों से राजस्थान में सियासी घमासान

» पूर्व सीएम का सीएम को 24 घंटे का अल्टीमेटम, बोले- आरोपों के सबूत दें या माफी मांगें

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की ओर से जोधपुर में पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर लगाए गए आरोपों के बाद राजस्थान की सियासत गरमा गई है। गहलोत ने बुधवार को पलटवार करते हुए मुख्यमंत्री से अपने आरोपों के समर्थन में तथ्य और दस्तावेज सार्वजनिक करने को कहा। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि मुख्यमंत्री 24 घंटे में सबूत सामने नहीं रखते हैं तो उन्हें माफी मांगनी चाहिए। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने जोधपुर में गहलोत पर किसानों को लूटने और नकली खाद-बीज बेचने सहित कई आरोप लगाए थे। गहलोत ने इन आरोपों को झूठा और तथ्यहीन बताते हुए कहा कि मुख्यमंत्री ने उनके खिलाफ व्यक्तिगत टिप्पणियां की हैं। उन्होंने यह भी सवाल उठाया कि आईएएस शिखर अग्रवाल और अनंता कंपनी से जुड़े मामले में मुख्यमंत्री अपनी भूमिका पर जवाब क्यों नहीं दे रहे हैं।



गहलोत ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि जोधपुर में मुख्यमंत्री ने बिना तथ्यों के उनके बारे में ऐसी बातें कहीं, जिनसे उन्हें पीड़ा पहुंची है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने उनके खिलाफ झूठे आरोप लगाकर एक काल्पनिक कहानी प्रचारित की है। गहलोत ने मांग की कि मुख्यमंत्री आरोपों का पूरा विवरण तथ्यों और दस्तावेजों के साथ उन्हें और प्रदेश की जनता के सामने रखें। ऐसा नहीं करने पर 24 घंटे में माफी मांगें। गहलोत ने यह भी आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री अपराधबोध में बौखला गए हैं और उन्होंने भाषा की मर्यादा की सीमाएं पार कर दी हैं। उनके अनुसार, इस तरह के बयान देकर मुख्यमंत्री जनता का ध्यान दूसरे मुद्दों से हटाने की कोशिश कर रहे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री ने आईएएस शिखर अग्रवाल से जुड़े मामले को भी उठाया। उन्होंने कहा कि उन्हें उम्मीद थी कि मुख्यमंत्री अपने पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव शिखर अग्रवाल और विला खरीद से जुड़े आरोपों पर खुद सामने आकर स्थिति स्पष्ट करेंगे।गहलोत ने अनंता कंपनी को विशेष छूट देने के फैसले का जिक्र करते हुए कहा कि जिस बोर्ड की बैठक में यह निर्णय हुआ, उसके अध्यक्ष मुख्यमंत्री स्वयं हैं। उन्होंने सवाल किया कि इस मामले की जांच मुख्यमंत्री अपने अधीन एसीबी के बजाय केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) को क्यों नहीं सौंप रहे हैं।

बयान के लिए माफी मांगे सीएम : जूली

नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने भी गहलोत के समर्थन में बयान जारी किया। उन्होंने कहा कि अशोक गहलोत का लंबा सार्वजनिक जीवन बेदाग और आदर्शों से भरा रहा है। जूली ने गहलोत के राजनीतिक अनुभव का उल्लेख करते हुए कहा कि जब भजनलाल शर्मा ने 2003 में पहली बार विधानसभा चुनाव लड़ा था, तब तक गहलोत पांच बार सांसद और तीन बार केंद्रीय मंत्री रह चुके थे तथा राजस्थान के मुख्यमंत्री भी बन चुके थे। जूली ने मुख्यमंत्री के आरोपों को मिथ्या बताते हुए कहा कि शिखर अग्रवाल से जुड़े मामले में सवाल उठने के बाद इस तरह के बयान दिए गए हैं। उन्होंने मुख्यमंत्री से अपने बयान के लिए माफी मांगने की मांग की।

डोटासरा बोले- आरोपों का जवाब तथ्यों से दें मुख्यमंत्री

कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने भी मुख्यमंत्री के बयान पर आपत्ति जताई। उन्होंने एक्स पर लिखा कि जब सरकार, मुख्यमंत्री कार्यालय और उसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले अधिकारियों पर सवाल उठ रहे हैं, तो मुख्यमंत्री की जवाबदेही बनती है। डोटासरा ने कहा कि आरोपों के बाद कार्रवाई होना अच्छी बात है, लेकिन यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि जांच का अंतिम परिणाम क्या होगा और क्या पूरे मामले में निष्पक्ष जांच के बाद जिम्मेदारी तय की जाएगी। उन्होंने सवाल उठाया कि यदि मुख्यमंत्री के पास गहलोत के खिलाफ इतने गंभीर आरोपों के तथ्य और प्रमाण थे तो तीन साल तक वे चुप क्यों रहे और अब उन्हें सार्वजनिक करने की जरूरत क्यों पड़ी? डोटासरा ने कहा कि आरोपों में सच्चाई है तो मुख्यमंत्री सत्ता और प्रशासनिक मशीनरी के जरिए प्रमाण सार्वजनिक करें तथा कानून के अनुसार कार्रवाई करें। व्यक्तिगत टिप्पणियों से सरकार और मुख्यमंत्री कार्यालय से जुड़े सवालों से बचा नहीं जा सकता।

जम्मू और कश्मीर को राज्य का दर्जा बहाल करने को लेकर सियासी बवाल

» श्रीनगर के सांसद आगा रुहुल्लाह पर भड़की नेकां

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

श्रीनगर। सत्तारूढ़ नेशनल कॉन्फ्रेंस ने कहा कि जम्मू और कश्मीर को राज्य का दर्जा बहाल करने पर उसका जोर विशेष दर्जे की बहाली की मांग की कीमत पर कभी नहीं होगा। यह बयान श्रीनगर के सांसद आगा रुहुल्लाह द्वारा बडगाम जिले की एक रैली में पार्टी से इस्तीफा देने की घोषणा के बाद आया। नेशनल कॉन्फ्रेंस ने रुहुल्लाह के इस कदम को उनके मानसिक और नैतिक दिवालियापन का उदाहरण बताया। पार्टी ने अपने एक्स हैंडल पर पोस्ट किया कि विशेष दर्जे की सुरक्षा और सांविधानिक अधिकारों का संरक्षण उसकी राजनीतिक विचारधारा की नींव है।



इसे छोड़ना पार्टी के 90 से अधिक वर्षों के सिद्धांतों को छोड़ना होगा। नेशनल कॉन्फ्रेंस ने रुहुल्लाह के भाषण को नेतृत्व के खिलाफ अपमानजनक और असंसदीय बताया। पार्टी ने आरोप लगाया कि रुहुल्लाह ने विशेष दर्जे के मुद्दे पर इस्तीफा दिया, लेकिन यह पार्टी अध्यक्ष के कहने पर हुआ। नेशनल कॉन्फ्रेंस ने याद दिलाया कि रुहुल्लाह 2010 में मंत्री थे और 2014 में एनसी टिकट पर चुनाव लड़े थे, तब उन्होंने 2010 की घटनाओं को नहीं उठाया। पार्टी ने रुहुल्लाह से सवाल किया कि उन्होंने जम्मू और कश्मीर के विशेष दर्जे के लिए संसद में क्या किया है। नेशनल कॉन्फ्रेंस ने पूछा कि क्या उन्हें लोगों की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए संसद में नहीं चुना गया था। पार्टी ने बताया कि रुहुल्लाह ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश शेखर कुमार यादव के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव के लिए 100 से अधिक सांसदों के हस्ताक्षर जुटाए थे। नेशनल कॉन्फ्रेंस ने पूछा कि क्या उन्होंने कभी विशेष दर्जे या राज्य के दर्जे की बहाली के लिए ऐसा प्रयास किया। नेशनल कॉन्फ्रेंस ने अपनी प्रतिबद्धता दोहराई कि राज्य का दर्जा बहाली विशेष दर्जे की कीमत पर नहीं होगी। पार्टी ने कहा कि अगर ऐसा होता तो सरकार का पहला काम विशेष दर्जे पर केंद्रित नहीं होता। मुख्यमंत्री के 15 अगस्त के भाषण में भी इसकी पुष्टि की गई थी।

प्रशांत भूषण पर एफआईआर दर्ज

» एक्स हैंडल पर रूस के विदेश मंत्री का फेक वीडियो शेयर करने का आरोप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। फर्जी वीडियो मामले में वकील प्रशांत भूषण की मुश्किलें बढ़ गई हैं। दिल्ली पुलिस ने उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। दरअसल प्रशांत भूषण पर ये एफआईआर उनके सोशल मीडिया हैंडल से कथित फर्जी वीडियो शेयर करने के मामले में दर्ज की गई है। सोशल मीडिया हैंडल ने दावा किया है कि प्रशांत भूषण के एक्स हैंडल से रूस के विदेश मंत्री का कथित छेड़छाड़ किया हुआ वीडियो शेयर किया गया. आरोप है कि वीडियो के जरिए भारत विरोधी और भ्रामक जानकारी फैलाने की कोशिश की गई। पोस्ट के जरिए मानहानिकारक और भड़काऊ सामग्री फैलाकर लोगों को भड़काने और अफवाह फैलाने का भी आरोप है। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने इस मामले में बीएनएस की धारा 336(4), 353(1), 356, 340(2) और बीएनएस एक्ट की धारा 66के तहत एफआईआर र्ज की है।

इस मामले में विदेश मंत्रालय भी वीडियो को एआई जनरेटेड बता चुका है. रूस के विदेश मंत्री का कथित फेक वीडियो शेयर करने का मामला 3 नवंबर को साइबर पेट्रोलिंग के दौरान मामला सामने आया था। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने बीएनएस की चार धाराओं और आईटी एक्ट की धारा 66 के तहत केस प्रशांत भूषण के खिलाफ केस दर्ज किया है। दिल्ली पुलिस के मुताबिक, साइबर पेट्रोलिंग के दौरान पता चला कि सोशल मीडिया हैंडल द्वारा प्रशांत भूषण के हैंडल से रूस के विदेश मंत्री का भारत विरोधी कथित फेक वीडियो शेयर किए जाने का दावा किया गया. उस वीडियो के जरिए भ्रामक, मानहानिकारक और भड़काऊ सामग्री प्रसारित कर सार्वजनिक उपद्रव और अफवाहें फैलाने का आरोप लगा है. इस मामले में बीएनएस और आईटी की धाराओं में स्पेशल सेल से केस रजिस्टर किया है।

भाजपा की पैदल यात्रा से जनता जाम में कैद

» हजरतगंज से पूरे शहर तक थमी गाड़ियों की रफ्तार

» एंबुलेंस भी रास्तों की परिक्रमा करती रहीं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लोकतंत्र बचाओ, अराजकता हटाओ के नारे के साथ निकाली गई पैदल यात्रा रैली ने राजधानी की यातायात व्यवस्था की रफ्तार पर ब्रेक लगा दिया। रैली के चलते हजरतगंज में यातायात थमा तो उसका असर शहर के दूसरे प्रमुख मार्गों पर भी दिखाई देने लगा। देखते ही देखते लखनऊ के कई इलाकों में जाम लग गया। सड़कों पर वाहनों की लंबी कतारें लगने से आम जनता घंटों जाम में फंसी रही। रैली में शामिल लोगों के हुजूम के बीच यातायात व्यवस्था प्रभावित होती रही। हजरतगंज जैसे व्यस्त चौराहे पर ट्रैफिक रुकने का असर आसपास के रास्तों पर पड़ा और वाहनों का दबाव दूसरे मार्गों पर बढ़ता चला गया।



दफ्तर जाने वाले कर्मचारी, स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थी, मरीजों को लेकर जा रहे वाहन और रोजमर्रा के काम से निकले लोग जाम में फंसकर परेशान होते रहे। विडंबना देखिए कि जिस पैदल यात्रा का नारा लोकतंत्र बचाने और अराजकता हटाने का था, उसी के चलते राजधानी की सड़कों पर आम नागरिकों को अव्यवस्था का सामना करना पड़ा। लोगों के मन में यही सवाल उठता रहा कि राजनीतिक और सामाजिक आयोजनों के दौरान आम जनता की सहूलियत का ध्यान आखिर कौन रखेगा?

ट्रैफिक पुलिस की बैरिकेडिंग भी बेकाम, जनता परेशान

रैली के चलते हजरतगंज समेत शहर के कई प्रमुख मार्गों पर यातायात व्यवस्था ध्वस्त नजर आई। हालात ऐसे बने कि लोगों को अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए लंबा रास्ता तय करना पड़ा। पूरे शहर को मानो यू-टर्न और बैरिकेडिंग के भरोसे छोड़ दिया गया।सबसे गंभीर स्थिति तब नजर आई, जब एंबुलेंस तक को रास्ता पाने के लिए परिक्रमा करनी पड़ी। सवाल यह है कि जब वीवीआईपी मूवमेंट के दौरान रास्ते खोलने और यातायात सुचारु रखने की व्यवस्था की जाती है, तो आम जनता और मरीजों के लिए ऐसी व्यवस्था क्यों नहीं दिखाई दी? शहर की ट्रैफिक पुलिस आखिर कर क्या रही थी? क्या यातायात प्रबंधन का मतलब सिर्फ चौराहों पर बैरिकेडिंग लगाना और वाहनों को यू-टर्न दिलाना रह गया है? क्या रैली से पहले वैकल्पिक मार्गों, डायवर्जन और आपातकालीन वाहनों के लिए कोई प्रभावी व्यवस्था बनाई गई थी? एक तरफ रैली आगे बढ़ती रही, दूसरी तरफ नौकरीपेशा लोग, स्कूली बच्चे, मरीज और जरूरी काम से निकले नागरिक सड़कों पर जाम से जूझते रहे।

लिविंगस्टोन को टीम में शामिल करने की तैयारी में चेन्नई

» हार्दिक पांड्या की ट्रेड रेस में पंजाब किंग्स सबसे आगे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। आईपीएल 2027 के मिनी ऑक्शन से पहले खिलाड़ियों की ट्रेडिंग को लेकर हलचल तेज हो गई है। हार्दिक पांड्या के मुंबई इंडियंस छोड़ने की चर्चाओं के बीच अब चेन्नई सुपर किंग्स की नजर सनराइजर्स हैदराबाद के ऑलराउंडर लियाम लिविंगस्टोन पर है। रिपोर्ट के मुताबिक, चेन्नई की टीम इंग्लैंड के इस खिलाड़ी को अपने साथ जोड़ने के विकल्प तलाश रही है। हालांकि, सनराइजर्स हैदराबाद ने अभी तक इस मामले में कोई अंतिम फैसला नहीं लिया है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि उत्तर भारत की एक अन्य फ्रेंचाइजी ने भी इस खिलाड़ी में दिलचस्पी दिखाई है।

सनराइजर्स हैदराबाद ने आईपीएल 2026 से पहले हुई नीलामी में लिविंगस्टोन को 13 करोड़ रुपये में खरीदा था। लिविंगस्टोन ने 2019 में राजस्थान रॉयल्स के साथ आईपीएल करियर की शुरुआत की थी। तब उन्हें 50 लाख रुपये में खरीदा गया था। आईपीएल 2022 की नीलामी में पंजाब किंग्स ने उनके लिए 11.5 करोड़ रुपये खर्च किए। इसके बाद आईपीएल 2025 से पहले पंजाब ने उन्हें रिलीज कर दिया और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने 8.75 करोड़ रुपये में अपने साथ जोड़ा था।



दूसरी ओर, हार्दिक पांड्या को लेकर भी ट्रेड की चर्चाएं लगातार तेज हो रही हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, मुंबई इंडियंस से हार्दिक को ट्रेड करने की दौड़ में पंजाब किंग्स फिलहाल सबसे आगे है। कोलकाता नाइटराइडर्स, राजस्थान रॉयल्स और लखनऊ सुपर जायंट्स ने भी इस ऑलराउंडर को अपने साथ जोड़ने में दिलचस्पी दिखाई है। एक सूत्र ने कहा, हां, यह सही है कि फिलहाल पंजाब किंग्स हार्दिक को हासिल करने की दौड़ में आगे है। अगर दोनों टीमों के शीर्ष प्रबंधन के बीच मौखिक बातचीत के अनुसार सब कुछ ठीक रहता है तो हार्दिक की ट्रेड प्रक्रिया पूरी करने के लिए जल्द ही औपचारिक कागजी कार्रवाई शुरू हो सकती है। इसके बाद आईपीएल अधिकारियों की मंजूरी ली जाएगी।

प्रेमा रावत का महिला टी20 क्रिकेट में सबसे तेज अर्धशतक

पुणे। भारतीय ऑलराउंडर प्रेमा रावत ने सीनियर महिला टी20 ट्रॉफी के मैच में मंगलवार को 14 गेंदों में अर्धशतक जड़कर महिला टी20 क्रिकेट में सबसे तेज 50 रन बनाने का रिकॉर्ड अपने नाम दर्ज किया। उत्तराखंड की इस 24 वर्षीय खिलाड़ी ने अपनी पारी में छह चौके और चार छक्के लगाए और उनका स्ट्राइक रेट 357 रहा। उनकी इस पारी के दम पर उत्तराखंड ने हैदराबाद को 89 रन से हराया। महिला टी20 में सबसे तेज अर्धशतक बनाने का रिकॉर्ड पाकिस्तान की कप्तान फातिमा सना के नाम है, जिन्होंने इस साल की शुरुआत में जिम्बाब्वे के खिलाफ 15 गेंदों में यह उपलब्धि हासिल की थी। इंग्लैंड की मैरी केली और ऑस्ट्रेलिया की लौरा हैरिस ने भी घरेलू क्रिकेट में 15 गेंदों में अर्धशतक बनाए हैं।

पीएम से बहस को लेकर कांग्रेस व भाजपा में बढ़ा तनाव

मोदी से खुली बहस की मांग पर अड़ गए नेता प्रतिपक्ष

» विदेशी ताकतों से संबंध किसके हैं और किस तरह के है बहस में पता चल जाएगा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नयी दिल्ली। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को खुली बहस की चुनौती मंगलवार को फिर दोहराई और कहा कि प्रधानमंत्री किसी भी मंच और स्थान का चयन कर सकते हैं। उन्होंने तंज कसते हुए यह भी कहा कि प्रधानमंत्री बहस के लिए आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत को जज भी बना सकते हैं। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रीजीजू ने राहुल गांधी की चुनौती पर तंज कसते हुए कहा कि उच्च स्तर की बहस परिपक्व लोगों के बीच होती है।

बीते सोमवर को प्रधानमंत्री को बहस की चुनौती देने के 24 घंटे बाद गांधी ने एक वीडियो संदेश जारी कर कहा कि प्रधानमंत्री को विपक्ष को देशद्रोही बताने और विदेशी ताकतों से कथित संबंधों के आरोपों पर खुलकर चर्चा करनी चाहिए। गांधी ने कहा, 24 घंटे हो गए मोदी जी। मैंने आपको चुनौती दी है। आप कहते हैं कि विपक्ष देशद्रोही है। किसी भी मंच पर, आप जगह चुनिए और मेरे साथ बहस कीजिए। देशद्रोही कौन है? विदेशी ताकतों से संबंध किसके हैं और किस तरह के हैं? जल्दी से जल्दी कीजिए, डरिए मत। उनका कहना है, एक तरफ आप बैठेंगे और एक तरफ मैं बैठूंगा। जिसको आप जज बनाना चाहते हैं, बना दीजिए। मोहन भागवत जी को बिठा दीजिए और फिर बहस करते हैं। कांग्रेस नेता ने कहा कि बहस में देश की वित्तीय व्यवस्था, वित्तीय ढांचे, अमेरिका के साथ हुए समझौते, उद्योगपति गौतम अदाणी से जुड़े एक मामले और जेफ्री एपस्टीन प्रकरण सहित कई मुद्दों पर चर्चा होनी चाहिए। उन्होंने सवाल उठाया कि अमेरिका के साथ समझौता इतनी जल्दी कैसे हुआ, इसके बारे में मंत्रिमंडल को जानकारी क्यों नहीं दी गई और इस प्रक्रिया में पारदर्शिता क्यों नहीं रखी गई? गांधी ने अदाणी मामले का उल्लेख करते हुए भी सरकार से सवाल पूछे। उन्होंने कहा कि इन सभी मुद्दों पर खुलकर चर्चा होनी चाहिए, ताकि सच्चाई सामने आ सके।

राहुल गांधी बोले- मोहन भागवत को बना लें जज



राजनाथ, गडकरी, शिवराज व योगी मोदी को मनाएं

राहुल गांधी ने 'एक्स' पर एक अन्य पोस्ट में देश के युवाओं से पूछा कि क्या वे उनके और प्रधानमंत्री मोदी के बीच खुली बहस देखना चाहते हैं। उन्होंने केंद्रीय मंत्रियों राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी और शिवराज सिंह चौहान के साथ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से भी प्रधानमंत्री को बहस के लिए मनाने की अपील की। उन्होंने लिखा कि ये सभी नेता प्रधानमंत्री के हितों को ध्यान में रखते हैं, इसलिए उन्हें मोदी को बहस के लिए राजी करना चाहिए।

शीर्ष स्तर की बहस परिपक्व लोगों के बीच होती है: रीजीजू



रीजीजू ने गांधी पर पलटवार करते हुए 'एक्स' पर पोस्ट किया, शीर्ष स्तर की बहस परिपक्व लोगों के बीच होती है। उन्होंने आरोप लगाया कि भारत के दुश्मनों के एजेंडे को आगे बढ़ाते हुए दूसरों पर विदेशी समर्थन लेने का आरोप लगाना आत्म-उपहास जैसा है। दरअसल, प्रधानमंत्री मोदी ने शनिवार को गुजरात में राष्ट्रीय एकता दिवस के कार्यक्रम में विपक्ष पर निशाना साधा था और कहा था कि जब देश बाहरी चुनौतियों का सामना कर रहा था, तब देश के भीतर कुछ ताकतें झूठ और अफवाह फैलाकर अस्थिरता पैदा करने की कोशिश कर रही थीं।

दिल्ली एसआईआर में फॉर्म 6 पर अड़ा चुनाव आयोग

» सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल, दिवाली की छुट्टियों के बाद सुनवाई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण-एसआईआर के दौरान मतदाता सूची से हटाए गए पुराने मतदाताओं से नए मतदाता के रूप में फॉर्म 6 भरवाने के चुनाव आयोग के कथित आग्रह का मामला बुधवार को सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया। वरिष्ठ वकील प्रशांत भूषण ने चीफ जस्टिस सूर्यकांत के समक्ष तत्काल सुनवाई के लिए मामले का उल्लेख किया। उन्होंने आरोप लगाया कि चुनाव आयोग अब भी उन मतदाताओं से फॉर्म 6 भरने को कह रहा है, जिनके नाम पहले से मतदाता सूची में थे लेकिन एसआईआर के दौरान हटा दिए गए हैं। गौरतलब है कि फॉर्म 6 का इस्तेमाल नए मतदाताओं के पंजीकरण के लिए किया जाता है।



28 अक्टूबर को सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया था कि पहले से मतदाता सूची में शामिल रहे और बाद में हटाए गए नागरिकों को नए मतदाता के तौर पर फॉर्म 6 भरने के लिए बाध्य करना चुनाव आयोग की गलती है. याचिकाकर्ताओं अंजलि भारद्वाज और अमृता जोहरी की ओर से प्रशांत भूषण, शेरिल डिसूजा और नेहा राठी पेश हुए। याचिकाकर्ताओं ने आरोप लगाया था कि चुनाव आयोग मतदाताओं को खुद को नए आवेदक के रूप में पेश करने के लिए मजबूर कर रहा है, जबकि फॉर्म 6 में ऐसा गलत घोषणापत्र देना कानूनी कार्रवाई और जेल की सजा का कारण बन सकता है। सीजेआई ने यह भी ध्यान दिलाया कि चुनाव आयोग ने दावे और आपत्तियां दाखिल करने की अंतिम तारीख 30 अक्टूबर से बढ़ाकर 25 नवंबर कर दी है। पीठ ने कहा कि मामले पर दिवाली की छुट्टियों के बाद सुनवाई की जाएगी।

मुख्यमंत्री के दौरे न हो तो न हो सफाई

» सफाई व्यवस्था की पोल खुली, रातों रात सक्रिय हुआ नगर निगम

» करोड़ों का भुगतान पाने वाली लखनऊ स्वच्छता अभियान कंपनी पर लाखों का जुर्माना भी बेअसर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। शहर की सफाई व्यवस्था को लेकर नगर निगम के दावों की हकीकत एक बार फिर सामने आ गई। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सोमवार को चंदन अस्पताल पहुंचने के कार्यक्रम ने नगर निगम के जोन-4 की सफाई व्यवस्था की स्थिति उजागर कर दी। मुख्यमंत्री पूर्व मंत्री महेंद्र नाथ सिंह का हालचाल लेने अस्पताल पहुंचे थे, लेकिन उनके दौरे के बाद सफाई व्यवस्था को लेकर नगर निगम के अधिकारियों की सक्रियता ने कई सवाल खड़े कर दिए।

बताया जा रहा है कि मुख्यमंत्री ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के दौरान सफाई व्यवस्था पर नाराजगी जाहिर की थी। इसके बाद रातोंरात मंडलायुक्त से लेकर नगर निगम के अधिकारियों तक की सक्रियता बढ़ गई। अधिकारी मौके पर पहुंचने लगे। सुबह नगरीय निकाय निदेशक ने भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से नाराजगी जताई। साथ ही स्पष्ट किया गया कि जिस स्तर पर लापरवाही सामने आएगी, संबंधित जिम्मेदार के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।



सफाई की निगरानी जोनल अधिकारी की जिम्मेदारी

हैरानी की बात यह भी है कि मुख्यमंत्री के दौरे के बाद जोनल अधिकारी से लेकर सफाई व्यवस्था से जुड़े कर्मचारी तक अस्पताल के बाहर नजर आने लगे। जबकि सफाई की निगरानी उनकी नियमित जिम्मेदारी है। ऐसे में जोनल अधिकारी के साथ जोनल सेनेटरी अधिकारी पंकज शुक्ला की भूमिका और जवाबदेही भी जांच के दायरे में आनी चाहिए।

निजी कंपनी की जवाबदेही कब होगी तय



लेकिन सबसे बड़ा सवाल उस निजी कंपनी की जवाबदेही को लेकर है, जिसे शहर की सफाई और प्रमुख मार्गों की स्वच्छता का जिम्मा सौंपा गया है। लखनऊ स्वच्छता अभियान प्राइवेट लिमिटेड को सफाई के नाम पर करोड़ों रुपये का भुगतान किया जा रहा है, लेकिन शहर की सड़कों पर कूड़े के ढेर और सफाई में लापरवाही के आरोप लगातार सामने आ रहे हैं।नगर निगम की कार्रवाई भी सवालों के घेरे में है। कंपनी पर लाखों रुपये का जुर्माना लगाया जाता है, लेकिन क्या इसका असर उसकी कार्यप्रणाली पर दिखाई देता है? करोड़ों का भुगतान और उसके मुकाबले लाखों का जुर्माना-क्या इतनी कार्रवाई से कंपनी की जवाबदेही तय हो पा रही है? आरोप हैं कि कई स्थानों पर कूड़ा उठाने और सफाई के नाम पर केवल औपचारिकता निभाई जा रही है।

दो से अधिक बच्चे होने पर चुनाव न लड़ने देने वाले कानूनों की अब जरूरत नहीं : सुप्रीमकोर्ट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि स्थानीय निकायों के चुनाव लड़ने के लिए 2 से अधिक बच्चे होने पर अयोग्य ठहराने वाले कानूनों की प्रासंगिकता अब चखत्म हो गई है। सुप्रीम कोर्ट ने कड़ा रुख अपनाते हुए कहा कि जनसांख्यिकीय बदलावों के कारण, ऐसे प्रतिबंधों के पीछे का तर्क ही अब बेमानी हो गया है। अदालत ने कहा कि भारत की कुल प्रजनन दर 2003 में 3 थी, जब सुप्रीम कोर्ट ने जावेद बनाम हरियाणा राज्य मामले में दो बच्चों के नियम की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखा था, जो अब घटकर 1.9 रह गई है।

अदालत ने गौर किया कि प्रजनन दर में आ रही यह गिरावट, जो अब 2.1 के रिप्लेसमेंट लेवल से भी नीचे चली गई है, जल्द ही एक ऐसे जनसांख्यिकीय बदलाव की ओर ले जाएगी, जिसमें आबादी की उम्र बढ़ेगी और काम करने वाली उम्र के लोगों की हिस्सेदारी कम हो जाएगी। जस्टिस नरसिम्हा ने अपना फैसला सुनाते हुए कहा, हमारा दृढ़ मत है कि दो से अधिक बच्चे होने पर दंड देने वाले कानूनों की प्रासंगिकता अब खत्म हो चुकी है। इन कानूनों का आधार यानी अत्यधिक जनसंख्या का डर पिछले कुछ दशकों में आए जनसांख्यिकीय बदलावों के कारण अब खत्म हो गया है।

» शीर्ष कोर्ट ने जनसांख्यिकीय बदलावों के कारण ऐसे कानूनों को बेमानी बताया

एमएलसी चुनाव के बाद एनडीए में नहीं थम रही रार

» सांसद राजीव प्रताप रूडी के बयान से गरमाई बिहार की सियासत

» जदयू की हार, भाजपा पर निर्दलीय को शामिल करने का आरोप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। विधान परिषद की शिक्षक एवं स्नातक सीटों पर हुए चुनाव ने एनडीए को तनाव में डाल दिया है। पहले तनाव परिणाम पर हुआ, जब जदयू अपने कोटे की चार में से तीन सीटों पर हार गया। लेकिन, दो निर्दलीय विधान पार्षदों-वंशीधर ब्रजवासी और राहुल राज को भाजपा में शामिल कराने के प्रयास के बाद तनाव बढ़ता ही जा रहा है।



हालांकि कानूनी बाधाओं के कारण दोनों निर्दलीय भाजपा में औपचारिक रूप से शामिल नहीं हो पाए। अब वे कह रहे कि भाजपा का समर्थन कर रहे हैं। उधर भाजपा के वरिष्ठ नेता और सांसद राजीव प्रताप रूडी ने यह कह कर अलग मोर्चा खोल दिया कि भाजपा नेतृत्व ने किसी राजपूत नेता की ऐसी हैसियत नहीं है कि उनके कहने पर कोई राजपूत चुनाव मैदान से हट जाए। उन्होंने कहा-आपको क्या लगता है कि आज बीजेपी किसी राजपूत नेता को इतना महत्व दे रही है कि उसकी कही बातों को लोग मान लें। राज्य में ऐसा कोई राजपूत नेता नहीं है, जिसके कहने पर इस जाति के लोग किसी दल को वोट दें।

आनंद के आरोप पर जवाब

रुडी की यह टिप्पणी सारण शिक्षक क्षेत्र से जदयू के पराजित उम्मीदवार आनंद पुष्कर के इस आरोप पर आई है कि भाजपा के तीन सांसद-राजीव प्रताप रुडी, जनार्दन सिंह सिग्रीवाल और राधामोहन सिंह ने इस चुनाव में गठबंधन धर्म का पालन करते हुए उनकी मदद नहीं की। रूडी, सिग्रीवाल और राधामोहन क्रमशः छपरा,महाराजगंज और पूर्वी चंपारण के भाजपा सांसद हैं। यह तीनों संसदीय क्षेत्र सारण शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र का हिस्सा है। पुष्कर का आरोप इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि उन्हें पराजित करने वाले निर्दलीय राहुल राज भाजपा प्रदेश कार्यसमिति के सदस्य थे। बागी उम्मीदवार बनने के कारण उन्हें भाजपा ने छह वर्षों के लिए निष्कासित कर दिया था। लेकिन, जीत के बाद उन्हें भाजपा में शामिल कराने का प्रयास किया गया। इसमें रुडी की भी भूमिका थी।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। विधि सलाहकार: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा